A Daily News Magazine
इंदौर
गुरुवार, 1 अगस्त, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 9 अंक 279, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

इस बार मॉरीशस में महकेगा 'विश्वरंग'

भारत सहित 35 देश विश्व में हिन्दी व भारत की सांस्कृतिक प्रभुता पर करेंगे मंथन

भोपाल। साहित्य-संस्कृति और कला के इन्द्रधनुषी रंगों से सराबोर एशिया का सबसे विराट महोत्सव 'विश्वरंग' शीघ्र ही अपना छठा सोपान मॉरीशस में पूरा करने जा रहा है। आगामी 7,8 और 9 अगस्त को भारत सहित दुनिया के पैंतीस से भी ज़्यादा देश हिन्दी का परचम लहराने विश्वमंच पर एक साथ होंगे। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के साथ विश्वरंग की मुख्य मेजबानी मॉरीशस स्थित विश्व हिन्दी सचिवालय अपने सहयोगी संस्थानों के संयुक्त संयोजन में करेगा। तीन दिनों की बहुरंगी गतिविधियों के साक्षी बनने मॉरीशस गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन, प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगनाथ, उप प्रधानमंत्री श्रीमती लीला देवी दुकन, विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे और मॉरीशस उच्चायुक्त श्रीमती नंदिनी के. सिंगला सहित प्रतिभागी देशों की गणमान्य विभूतियों को आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर मॉरीशस स्थित रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान के मुक्ताकाश परिसर में टैगोर की सात फीट ऊँची प्रतिभा का अनावरण 'विश्वरंग' के सौजन्य से किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि किसी भी निजी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाने वाला दुनिया का पहला-अनूठा महोत्सव है- 'विश्वरंग'।

यह जानकारी 'विश्वरंग' के निदेशक, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति तथा साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी संतोष चौबे ने पत्रकारवार्ता में दी। उन्होंने कहा कि 'भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच के उद्घोष के साथ 2019 में शुरू हुआ 'विश्वरंग' छटवें संस्करण में वैश्विक विस्तार की दिशा में अपना महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रहा है। श्री चौबे ने कहा कि मॉरीशस में इस महोत्सव का होना हिन्दी के प्रसार, समृद्धि और उसके साथ जुड़े रचनात्मक कौशल को प्रोत्साहित करने का नया मंच निर्मित करेगा। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और एशिया महाद्वीपों के लगभग तीस देशों के प्रतिनिधियों की विश्वरंग में आमद निश्चय ही हिन्दी केन्द्रित उद्देश्यों को पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगी।

'विश्वरंग' के सह-निदेशक डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, वनमाली सृजन पीठ के इकाई अध्यक्ष श्री मुकेश वर्मा, 'विश्वरंग' आयोजन समिति के सदस्य श्री बलराम गुमास्ता, प्रवासी भारतीय साहित्य संस्कृति अध्ययन एवं शोध केन्द्र के समन्वयक जवाहर कर्नावट तथा टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने भी प्रेस वार्ता को संबोधित किया। इस अवसर 'विश्वरंग 2024' पर केन्द्रित बहुरंगी पोस्टर भी जारी किया गया।

विशाल समुद्र तट पर बसे मॉरीशस द्वीप स्थित विश्व हिन्दी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान और रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान में 'विश्वरंग' की गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी। श्री चौबे ने मीडिया प्रतिनिधियों को बताया कि महोत्सव को विचार सत्रों, सांस्कृतिक सभाओं और कार्यशालाओं में समन्वित किया गया है। इस तारतम्य में उन्होंने जोड़ा कि टैगोर विश्व विद्यालय के अंतर्गत स्थापित अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र और प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र द्वारा विश्व में पहली बार तैयार की गयी 64

देशों की हिन्दी रिपोर्ट तथा 11 देशों की हिन्दी साहित्यिक रचनाधर्मिता पर पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। वहीं वनमाली सृजन पीठ, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र तथा आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित विभिन्न ग्रंथों तथा पत्रिका के विशेषांकों का लोकार्पण भी किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि कला, साहित्य और संस्कृति की बहुआयामी सृजनशील दुनिया को सरोकारों से जोड़ने की मंशा और अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों में मानवीय जीवन का बहुरंगी परिवेश को रचने की उत्सवी आकांक्षा है 'विश्वरंग'।

प्रवासी इतिहास और संस्कृति पर वैचारिक सत्र: पहले दिन 7 अगस्त को आयोजित होने वाले वैचारिक सत्रों में पूर्व राजनयिक एवं ख्यात लेखक डॉ. पवन वर्मा से 'गिरमिटिया इतिहासः संघर्ष और निर्माण' पर संतोष चौबे संवाद करेंगे। वहीं, भारतीय संस्कृति और भाषाओं के विस्तार में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की भूमिका पर डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे पूर्व अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् का उद्बोधन होगा।

हिन्दी के विविध आयामों पर संवाद: समानांतर सत्रों में दूसरा एवं तीसरा दिन हिन्दी, साहित्य एवं उसके वैश्विक विस्तार से जुड़े आयामों के विमर्श पर केंद्रित होगा। इसमें देश-विदेश के शिक्षाविद् एवं साहित्यकार 'भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के विविध आयाम', 'विश्व के देशों में हिन्दीः स्थिति और संभावनाएं (नई पीढ़ी के संदर्भ में)', 'हिन्दी में विज्ञान लेखनः चुनौतियाँ और संभावनाएं', 'हिन्दी की विश्व चेतना और साहित्य', 'हिन्दी का वैश्विक प्रसार और जनसंचार माध्यम', 'हिन्दी शिक्षण में नवाचार और वैश्विक संदर्भ में प्रौद्योगिकी का प्रयोग', 'हिन्दी फ़िल्में और विश्व हिन्दी प्रसार', 'विश्व हिन्दी साहित्य में नई अभिव्यक्ति', 'विश्वरंग के माध्यम से हिन्दी की उपलब्धियाँ', 'वैश्विक स्तर पर हिन्दी में अनुवादः संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ', 'विश्व में हिन्दीः माध्यम मानकीकरण (देवनागरी लिपि के विशेष संदर्भ में)', 'कृत्रिम मेधाः हिन्दी और भविष्य की चुनौतियाँ' इत्यादि विषयों पर अपने विचार प्रकट करेंगे। इन विषयों पर संवाद के लिए मनोज श्रीवास्तव (भारत), सुनील कुलकर्णी (भारत), आरती लोकेश (यू.ए.ई.), डॉ. कृष्ण कुमार झा (मॉरीशस), डॉ. वीर बहादुर महतो, (नेपाल), दीप्ति अग्रवाल (यू.के.), आशीष कंधवे (म्यांमार), देवेंद्र मेवाड़ी (भारत), मनीष मोहन गोरे, मोहन सगोरिया, कृष्ण कुमार मिश्र (भारत), डॉ. नंदकिशोर आचार्य (भारत), बद्री नारायण, अल्पना मिश्र, (भारत),

रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. नवीन लोहनी (भारत), ओम थानवी (भारत), प्रियदर्शन (भारत), रमा शर्मा (जापान), शिप्रा शिल्पी (जर्मनी), डॉ. शशिदुखन (मॉरीशस), शालिनी वर्मा (कतर), अपर्णावत्स (ऑस्ट्रेलिया), इन्द्रजीत शर्मा (अमेरिका), डॉ. जवाहर कर्नावट (भारत), डॉ. कुमुद शर्मा (भारत), हिमानी मिश्र (न्यूजीलैंड), विजय मल्होत्रा, बालेंदु दधीच (भारत), वेदप्रकाश सिंह (जापान), अमिताभ सक्सेना (भारत), गुलशन सुखलाल (मॉरीशस), अतिला कोतलावल (श्रीलंका), डॉ. अंजलि चिंतामणि (मॉरीशस), डॉ. निखिता ओबिगाडू (मॉरीशस), नीलेश रघुवंशी (भारत), शुभंकर मिश्र (मॉरीशस), रामकुमार तिवारी (भारत), अरुण कमल (भारत), डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव (भारत), श्री विनय उपाध्याय (भारत), सोन-यन-उ (दक्षिण कोरिया), डॉ. सफर्मो तोलिबी (रूस), रीता कुमार (मुंबई), डॉ. टी.पी. बीहारी (मॉरीशस), जानकी प्रसाद शर्मा (भारत), बालेंदु दधीच (भारत), वेदप्रकाश सिंह (जापान) अलका धनपत (मॉरीशस), डॉ. संजीता वर्मा (नेपाल), डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव (भारत), अमिताभ सक्सेना (भारत) शामिल होंगे।

अंतरराष्ट्रीय कविता पाठ: समारोह में पहले दिन अंतरराष्ट्रीय कविता पाठ का आयोजन होगा जिसमें संतोष चौबे, बलराम गुमास्ता, नीलेश रघुवंशी, बद्री नारायण, लीलाधर मंडलोई, सविता भार्गव (भारत), डॉ. हेमराजसुंदर (मॉरीशस), डॉ. वीरसेनजगा सिंह (मॉरीशस), विनीता तिवारी (अमेरिका) शामिल होंगे। अंतरराष्ट्रीय रचनापाठ का आयोजन किया जाएगा जिसमें अंजू घरबरन (मॉरीशस), जय वर्मा (यू.के.), सारिका जैथलिया (इंडोनेशिया), ममता तिवारी (बहरीन), इशिता यादव (नाइजीरिया), अंजु पुरोहित (मलेशिया), पद्मेश गुप्त (यू.के.), डॉ. विनीता चौबे (भारत) जैसे रचनाकार शामिल होंगे। साथ ही आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय कथा पाठ में संतोष चौबे, अखिलेश, आशुतोष, जमुना बीनी (भारत), डॉ. वीरसेन जगासिंह (मॉरीशस) दिव्या माथुर (यू.के.), कल्पनालालजी (मॉरीशस) जैसे साहित्यकार शिरकत करेंगे। टैगोर की चित्रकला पर अशोक भौमिक का व्याख्यान होगा।

विश्वरंग सम्मान और पुस्तकें: समारोह के अंतर्गत 'विश्वरंग भाषा सम्मान 2024' प्रदान किए जाएंगे। ये सम्मान विदेशों में हिन्दी के प्रसार तथा नवोन्मेषी प्रकल्पों के लिए प्रदान किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न पुस्तकों का लोकार्पण किया जाएगा जिसमें 'विदेश में हिन्दी पत्रकारिता', 'विश्व में हिन्दी पुस्तक' एवं ग्यारह देशों के प्रवासी हिन्दी साहित्य, टैगोर की सांस्कृतिक देशना 'आनंद धारा' सहित अन्य पुस्तकों का लोकार्पण होगा।

संगीत और नृत्य: लोक, शास्त्रीय तथा सुगम संगीत की मनोहारी प्रस्तुतियाँ हर वर्ष की तरह इस बार भी विश्वरंग में अपनी महक बिखेरेंगी। इसमें मॉरिशस के कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति के साथ ही सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर क्षमा मालवीय के निर्देशन में 'होरी हो ब्रजराज' ब्रज का होली गीतों की दृश्य-श्रव्य रूपक, जयति चक्रवर्ती द्वारा रबीन्द्र संगीत, सुब्रतो सेन एवं साथी द्वारा बाउल गायन, प्रख्यात लोक गायिका मालिनी अवस्थी द्वारा लोक संगीत की प्रस्तुति दी जाएगी। इसके अलावा 'रसों का गुच्छा' नृत्य नाटिका का प्रस्तुतिकरण भी होगा।

सुप्रभात

माँ घर में आई है लेकिन वह अतिथि है
उसके पास उसके हज़ारों बाक़ी रह गए काम हैं
उसके पास उसका अपना घर है
जिसे लंबे समय तक नहीं छोड़ा जा सकता सूना
जो भरा हुआ है बीते हुए समय से
माँ धीरे-धीरे चली गई है इतनी दूर
कि उसके सबसे स्मरणीय और चमकदार रूप के लिए
लौटना होता है कई साल पहले के वक्त में
मैं चाहूँ तो भी नहीं रोक सकता माँ को जाने से
भूल चुका हूँ मैं हठ करना
दूर-दूर तक नहीं बची रह गई है मुझमें अबोधता
धीरे-धीरे मैं खुद चला आया हूँ माँ से इतनी दूर
कि मेरे घर में अब
माँ एक अतिथि है।

- कुमार अंबुज

आज 'विश्वरंग' पर विशेष..

इस बार साहित्य और कला के महोत्सव 'विश्वरंग' का छठा संस्करण सुदूर मॉरीशस में आयोजित होने जा रहा है। सांस्कृतिक जगत में अपनी अनूठी पहचान बना चुके विश्वरंग पर विशेष परिशिष्ट आज पेज 4-5 व आठ पर। - सं.

5 अगस्त तक होगी मूंग की खरीदी

सीएम ने ट्वीट कर दी जानकारी, आज खत्म हो रही थी खरीदी की समय सीमा

भोपाल (नप्र)। मप्र में मूंग खरीदी की तारीख बढ़ाई गई है। अब 5 अगस्त तक मूंग की खरीदी हो सकेगी। सीएम डॉ. मोहन यादव ने ट्वीट कर यह जानकारी दी है। प्रदेश के अलग-अलग जिलों में किसान मूंग खरीदी की तारीख आगे बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। वहीं कांग्रेस भी मूंग खरीदी को लेकर लगातार सरकारी सिस्टम पर सवाल उठा रही है।

किसानो की मांग पर तारीख में संशोधन किया

सीएम ने अपने ट्वीट में लिखा- प्रदेश सरकार के लिए किसान हित सर्वोपरि है। प्रदेश के किसान भाइयों की मांग को ध्यान में रखते हुए तिथि में संशोधन किया है। ग्रीष्मकालीन मूंग के लिए उपार्जन की तिथि 31 जुलाई तक निर्धारित थी, लेकिन किसानों के हित में निर्णय लिया है कि अब उपार्जन संबंधी समस्त जिलों में एक दिन आप किसानों को स्लाट बुकिंग करने के लिए दिया जा रहा है, जिससे 5 अगस्त तक मूंग का विक्रय किया जा सकेगा। संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि समय सीमा को ध्यान में रखते हुए यह भी ध्यान देना है कि वर्षाकाल होने से किसानों को कोई असुविधा न हो।

मॉरीशस में स्थापित होगी गुरूदेव की प्रतिमा

शिल्पकार नीरज की अनुपम कृति

साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित विश्वकवि रबीन्द्रनाथ टैगोर की आदमकद प्रतिमा मॉरीशस स्थित रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान के मुक्ताकाश परिसर में स्थापित की जाएगी। अवसर होगा 'विश्वरंग'। साहित्य और कलाओं के इस अन्तरराष्ट्रीय महोत्सव के उपलक्ष्य में गुरूदेव की यह मूर्ति टैगोर विश्वविद्यालय के सौजन्य से भेंट की जा रही है। मूर्ति का अनावरण मॉरीशस गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन करेंगे। इस मूर्ति के शिल्पकार हैं भोपाल के नीरज अहिरवार। विशेष विमान से करीब पांच क्विंटल वज़नी यह प्रतिमा मॉरीशस भेजी जा चुकी है।

लगभग ढाई महीने की समय सीमा में नीरज ने सात फीट ऊँची इस प्रतिमा का अद्भुत शिल्पांकन किया है। नीरज मध्यप्रदेश के बीना शहर के रहवासी हैं। भोपाल के भदभदा क्षेत्र में उनकी विशाल कार्यशाला है जहाँ वे दिन-रात अनूठी शिल्पकृतियाँ गढ़ने में मशगूल रहते हैं। इस अद्भुत कला-कौशल के लिए वे ललित कला अकादेमी दिल्ली के राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्यप्रदेश के राज्य स्तरीय कबीर सम्मान तथा भारत भवन के रूपंकर कला

सम्मान से विभूषित किये जा चुके हैं।

'विश्वरंग' के निदेशक संतोष चौबे के अनुसार मॉरीशस में टैगोर की प्रतिमा स्थापित होना एक ऐतिहासिक घटना है। भारत की ओर से यह हमारे पड़ौसी मैत्री देश को एक अद्वितीय आदर्श नायक की स्मृति का सांस्कृतिक उपहार होगा। नीरज के लिए गुरूदेव रबीन्द्रनाथ की प्रतिमा का निर्माण एक अलग किस्म की रचनात्मक चुनौती था। वे बताते हैं कि टैगोर के चेहरे पर भाव की अनंत गहराई और विचारों की महीन रेखाएँ हैं। उनका दैहिक कद और वेशभूषा भी विशिष्ट है। इन्हें शिल्प में ढालना बड़ी कसौटी था। नीरज को संतोष और प्रसन्नता है कि वे इन चुनौतियों पर खरा उतर पाए। मॉरीशस में अनावरित होने जा रही इस प्रतिमा के लिए नीरज ने आर्टिस्टिक ब्राँज का इस्तेमाल किया है। यह विभिन्न धातुओं का मिश्रण है। इस माध्यम के उपयोग से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी शिल्प सुरक्षित रहता है। उल्लेखनीय है कि नीरज के शिल्प भारत के विभिन्न संग्रहालयों के अलावा विदेशों की कला वीथिकाओं में भी प्रदर्शित हैं। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के खुले प्रांगण में भी नीरज के बनाए सुन्दर शिल्प प्रदर्शित हैं जिनमें गुरूदेव की मूर्ति भी आकर्षण का केन्द्र है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5°c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार,1 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पूजा खेड़कर का खेल खत्म ! रद्द हुआ सेलेक्शन

भविष्य में नहीं दे पाएंगी कोई भी एग्जाम, यूपीएससी का बड़ा ऐक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। संघ लोक सेवा आयोग ने बुधवार को पूजा खेडकर की उम्मीदवारी रद्द कर दी। उन पर धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोप थे। यूपीएससी ने पाया कि पूजा खेडकर ने नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिए, उन्हें भविष्य की सभी परीक्षाओं और चयनों से रोक दिया गया है। सरकार ने एक बयान में कहा, यूपीएससी ने उपलब्ध रिकॉर्ड की सावधानीपूर्वक जांच की है और पाया है कि वह यूपीएससी-2022 नियमों के प्रावधानों के विपरीत काम करने की दोषी हैं। यूपीएससी-2022 के लिए उनकी अनंतिम उम्मीदवारी रद्द कर दी गई है और उन्हें यूपीएससी की भविष्य की सभी परीक्षाओं /चयनों से स्थायी रूप से वंचित कर दिया गया है।

यूपीएससी ने यह भी कहा कि केवल खेडकर के मामले में ही वह उनके प्रयासों की संख्या का पता नहीं लगा सका। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने न केवल अपना नाम बदला बल्कि अपने माता-पिता का नाम भी बदल दिया। यूपीएससी ने पुष्टि की कि वह यह सुनिश्चित करने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को और मजबूत करने की प्रक्रिया में है कि भविष्य में ऐसा मामला दोबारा न हो। बयान में आगे कहा गया है कि पूजा मनोरमा दिलीप खेडकर के मामले की पृष्ठभूमि में यूपीएससी ने वर्ष 2009 से 2023 तक यानी 15 सालों से यूपीएससी के 15,000 से अधिक अंतिम रूप से रेकमेंडेड कैंडीडेट के उपलब्ध आंकड़ों की पूरी तरह से जांच की है।

बिना जाति पूछे कैसे होगी जाति जनगणना !

अनुराग के बचाव में खुलकर सामने आई बीजेपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर के जाति वाले बयान पर हंगामा जारी है। कांग्रेस सांसदों ने सदन के बाहर विरोध प्रदर्शन किया है। कांग्रेस का कहना है कि बीजेपी सांसद ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का अपमान किया है। कांग्रेस के प्रदर्शन पर कर्नाटक के पूर्व सीएम और भाजपा सांसद बसवराज बोम्मई ने कहा कि यह हैरानी के बाद है कि जातिगत जनगणना कराने की बात कहने वाले लोग जाति पूछे जाने से आहत हो रहे हैं। विपक्षी नेता अनुराग ठाकुर के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

एमपी में आईएएस और आईएफएस अफसरों में 'पॉवर गेम'

● सरकार का एक आदेश बना टकराव की वजह, बढ़ गया तनाव

भोपाल (एजेंसी)। भारत के मध्य में हाई लेवल पावर का संघर्ष चल रहा है। यह संघर्ष नेताओं के बीच नहीं है। पावर का यह झगड़ा मध्य प्रदेश में आईएएस और आईएफएस अफसरों के बीच है। भारतीय वन सेवा के अधिकारी मध्य प्रदेश सरकार के एक विवादास्पद आदेश को चुनौती दे रहे हैं, जिससे उनके अधिकार कमजोर होंगे। आईएफएस अफसरों के बीच यह संशय है कि नया आदेश पर्यावरण मंजूरियों को प्रभावित करने का एक सीक्रेट प्रयास है, यह देखते हुए कि कई नौकरशाहों ने टाइगर रिजर्व्स और अन्य संरक्षित क्षेत्रों के पास जमीन का अधिग्रहण किया है।

आर्मी मेडिकल सर्विस की पहली महिला डीजी होंगी साधना सक्सेना

● एयर मार्शल रैंक तक पहुंचने वाली दूसरी महिला, पति भी एयर मार्शल रह चुके

नई दिल्ली (एजेंसी)। लेफ्टिनेंट जनरल साधना सक्सेना नायर को बुधवार को आर्मी की मेडिकल सर्विस का डायरेक्टर जनरल बनाया गया है। साधना 1 अगस्त से पदभार संभालते ही, इस पद पर काम करने वाली पहली महिला बन जाएंगी। पिछले साल अक्टूबर में वायुसेना में एयर मार्शल पद पर प्रमोट किए जाने के बाद साधना को हॉस्पिटल सर्विसेस (आर्म्ड फोर्सेज) की डायरेक्टर जनरल (डीजी) बनाया गया था। इस पद नियुक्त होने वाली भी वे पहली महिला अधिकारी थीं।

लखनऊ में पानी-पानी हुई यूपी विधानसभा

● ऐसी बारिश की सीएम योगी को गेट बदलना पड़ गया

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में उमस भरी गर्मी से बड़ी राहत मिली है। बुधवार को यूपी की राजधानी समेत आसपास के कई जिलों में बारिश का शिलशिला देखने को मिला। लखनऊ में पिछले 2 घंटे से लगातार बारिश हो रही है। बारिश का पानी विधानसभा परिसर और नगर निगम के दफ्तर में घुस गया। विधानसभा के गेट नंबर सात पर इतना पानी लग गया कि मुख्यमंत्री की फ्लीट को गेट नंबर 1 से बाहर निकाला गया। दूसरी ओर, मुख्यमंत्री आवास के बाहर पार्क रोड पर जबरदस्त पानी भर गया है।

राजनीति मत करिए, 7 दिन पहले वॉर्निंग दी गई थी

केरल हादसे पर अमित शाह ने विपक्ष को खूब सुनाया

तिरुवनंतपुरम/नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल के वायनाड जिले में भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन में अभी तक 139 लोग मारे गए हैं। इस मुद्दे पर उठ रहे सवालों के बीच गृह मंत्री अमित शाह ने राज्य सभा में बयान दिया है। उन्होंने कहा कि केंद्र की तरफ से सात दिन पहले केरल सरकार को अलर्ट भेजा गया था। गृह मंत्री ने कहा कि अलर्ट के हिसाब से एनडीआरएफ की नौ टुकड़ियां भी भेज दी गई थीं। इसके बाद केंद्र सरकार के वॉर्निंग सिस्टम को लेकर टिप्पणियां की जा रही है। राज्य सभा में एनसीपी नेता प्रफुल पटेल के बोलने के बाद जवाब देने को खड़े हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि इस पर विस्तृत बयान गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ही देंगे, लेकिन चूंकि इस मामले पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। राजनीतिक टिप्पणियां हो रही हैं ऐसे में मैं साफ करना चाहता हूं कि केंद्र सरकार की तरफ से केरल को लैंडस्लाइड से सात दिन पहले ही वॉर्निंग भेज दी गई थी। यह चेतावनी भारी बारिश के बाद भेजी गई थी। उन्होंने कहा इसके बाद केरल सरकार ने क्या किया। क्या वहां से लोग शिफ्ट किए गए। अगर शिफ्ट किए गए तो लोग क्यों मरे। गृह मंत्री अमित शाह ने वायनाड हादसे पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि मैं पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। पीएम मोदी की अगुवाई वाली सरकार केरल की मदद के लिए खड़ी है, चूंकि इस मुद्दे पर राजनीतिक टिप्पणियां की जा रही हैं, ऐसे में मैं साफ करना चाहता हूं कि 2014 के बाद सरकार ने 2000 करोड़ रुपये के फंड से आधुनिक वॉर्निंग सिस्टम का काम पूरा किया है।

● **अमित शाह ने कहा कि यह राजनीति करने का वक्त नहीं**

हिमाचल में कांग्रेस विधायक-कोषाध्यक्ष पर ईडी का छापा

आयुष्मान भारत योजना में अनियमितताओं को लेकर जांच, चंडीगढ़ और पंजाब में भी छापेमारी

शिमला (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने बुधवार को हिमाचल, चंडीगढ़, पंजाब समेत 19 जगहों पर छापेमारी की। हिमाचल में 40 वाहनों में 150 अधिकारियों की टीम कांगड़ा और ऊना में अलग अलग जगह दस्तावेज खंगाल रही है। ईडी की टीम आयुष्मान भारत योजना में अनियमितताओं को लेकर नगरोटा बगवां से कांग्रेस विधायक आरएस बाली के घर और उनके निजी फोर्टिस अस्पताल की जांच कर रही है।

आरएस बाली डा.राजेश शर्मा

सब कुछ मिट्टी में दफन कई परिवार हो गए तबाह

खंडहर बने 4 गांव, वायनाड में अब तक 184 लोगों की मौत

170 लापता, 89 शवों की हुई पहचान, बचाव अभियान जारी

वायनाड (एजेंसी)। लैंडस्लाइड सोमवार देर रात 2 बजे और 4 बजे के करीब मुंडक्कई, चूरलमाला, अट्टामाला और नूलपुझा गांवों में हुई थीं। इनमें घर, पुल, सड़कें और गाड़ियां बह गईं। आर्मी, एयरफोर्स, एनडीआरएफ,एसडीआरएफ, पुलिस और डॉग स्क्वॉड की टीमें रेस्क्यू में जुटी हैं। देर रात तक 1 हजार लोगों का रेस्क्यू किया गया, 3 हजार लोगों को रिहैब सेंटर में भेजा गया है। मौसम विभाग ने वायनाड के अलावा मलप्पुरम, कोझिकोड, कन्नूर और कासरगोड जिले में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। इससे रेस्क्यू ऑपरेशन में परेशानी हो सकती है। सेना ने मुंडक्कई गांव के बाहर स्थित इला रिसॉर्ट और वाना रानी रिसॉर्ट में फंसे 19 टूरिस्ट को बुधवार को निकाला। ये घटना के बाद से यहीं फंसे हुए थे। डिफेंस के मुताबिक, 122 इन्फैंट्री बटालियन मद्रास के जवानों ने रस्सियों के सहारे सभी नागरिकों को चूरलमाला तक सुरक्षित निकालने के लिए एक मानव पुल बनाया। हादसे के बाद राज्य में दो दिन के राजकीय शोक की घोषणा की गई है। 12 जिलों में 30 जुलाई को स्कूल-कॉलेज में छुट्टी घोषित कर दी गई। केरल यूनिवर्सिटी ने 30 और 31 जुलाई को होने वाली सभी परीक्षाएं स्थगित कर दी हैं। नई तारीखों का ऐलान बाद में किया जाएगा। लैंडस्लाइड की घटना का जायजा लेने वायनाड जा रहीं केरल की हेल्थ मिनिस्टर वीना जॉर्ज बुधवार को सुबह करीब साढ़े 7 बजे एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गईं। उन्हें मलप्पुरम स्थित मंजेरी के मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। घटना एक स्कूटर सवार को बचाने के चलते हुई। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा ने खराब मौसम और सुरक्षा कारणों से वायनाड दौरा रद्द कर दिया है। राहुल ने आज कांग्रेस सांसदों के साथ संसद के सेंट्रल हॉल में वायनाड में जान गंवाने वाले लोगों के प्रति दो मिनट का मौन रखा। वायनाड का मुंडक्कई गांव लैंडस्लाइड की वजह से सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। यहां चूरलमाला को मुंडक्कई से जोड़ने वाला पुल बह गया है, जिससे क्षेत्र तक पहुंचना मुश्किल हो गया है। मुंडक्कई में करीब 250 लोगों के फंसे होने की खबर है। यहां कई घर बह गए हैं, जिनमें 65 परिवार रहते थे।

● **1 हजार से ज्यादा लोगों का रेस्क्यू, 3 हजार रिहैब सेंटर पहुंचे**

विधानसभा चुनावों से पहले संघ की शरण में बीजेपी

लोकसभा चुनाव से लिया सबक, तालमेल पर दिख रहा जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव में बीजेपी की सीटों के कम होने की एक वजह आरएसएस के साथ उसके तालमेल की कमी को भी माना गया। बीजेपी के अतिआत्मविश्वास का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता था कि उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने चुनाव के दौरान ही एक इंटरव्यू में कहा कि अब भाजपा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जरूरत नहीं है, वह खुद सक्षम है। लेकिन 4 जून को चुनाव नतीजों के बाद बीजेपी का ये भ्रम भी शायद टूट गया। अब आने वाले चुनावों में ये गलती न दोहराई जाए, इसके लिए बीजेपी कमर कस चुकी है। संघ से तालमेल में कोई कोर कसर न रह जाए, इसका खूब खयाल रख रही है। इसकी झलक महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड में दिख रही है जहां इस साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। बीजेपी तीन अहम राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले संघ के साथ तालमेल बढ़ाने की कोशिश कर रही है।

इसके लिए दोनों संगठनों के नेताओं के बीच लंबी-लंबी बैठकें हो रही हैं। सोमवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, बीजेपी के हरियाणा प्रभारी बिप्लब देब और सह-प्रभारी सुरेंद्र सिंह नागर सहित सूबे के बीजेपी नेता बैठक में शामिल हुए। बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष ने भी बैठक में शिरकत की। आरएसएस की तरफ से उसके सह सरकार्यवाह अरुण कुमार और हरियाणा इकाई के पदाधिकारी शामिल हुए। कुमार का काम बीजेपी और संघ के बीच सेतु का है। उन्हें दोनों संगठनों के बीच समन्वय की जिम्मेदारी मिली हुई है।

हमास का चीफ इस्माइल हानिये तेहरान में हुआ ढेर

ईरान का बड़ा आरोप-इजराइल ने घर पर मिसाइल दागी

तेहरान (एजेंसी)। हमास का पॉलिटिकल चीफ इस्माइल हानिये मारा गया है। ईरान के इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने इसकी पुष्टि की है। एजेंसी ने बुधवार सुबह बताया कि तेहरान में हानिये के ठिकाने पर रात 2 बजे (भारतीय समय के मुताबिक सुबह 4 बजे) मिसाइल से हमला किया गया। इसमें हानिये और उसके एक बॉडीगार्ड की मौत हो गई। हानिये मंगलवार को ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए तेहरान में था। हमास ने हानिये की मौत की पुष्टि कर दी है।

● **अमेरिका बोला- पलटवार हुआ तो हम इजराइल के साथ**

नाली कहां है, एमसीडी अधिकारी नहीं बता पाएंगे

● हाईकोर्ट बोला-अफसर ऑफिस से बाहर नहीं निकलते

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोचिंग इंस्टीट्यूट में तीन छात्रों की मौत के मामले में दिल्ली हाईकोर्ट ने एमसीडी को जमकर फटकार लगाई। एक्टिंग चीफ जस्टिस मनमोहन और जस्टिस तुषार राव की बेंच ने कहा- इस तरह की घटनाएं सिस्टम का फेल्योर है। ये सब मिलीभगत से हुआ है। एमसीडी अधिकारियों से पूछो कि नाली कहां है तो नहीं बता पाएंगे,क्योंकि बाहर ही नहीं निकलते।

4 राज्यों के चुनावी नतीजे बदलेंगे देश की राजनीति

सोनिया गांधी बोलीं-माहौल हमारे पक्ष में है, भाजपा का काम सिर्फ बांटना

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने बुधवार को पार्टी नेताओं से कहा कि कुछ ही महीनों में 4 राज्यों- महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव होने हैं। माहौल हमारे पक्ष में है। लोकसभा चुनाव में मिले जनता के समर्थन और भावनाओं को हमें बरकरार रखना है। सोनिया ने कहा- हमें आत्मसंतुष्ट और अति आत्मविश्वासी नहीं बनना चाहिए। मैं यह कह सकती हूं कि यदि हम लोकसभा चुनावों की तरह ही 4 राज्यों के विधानसभा चुनाव में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो राष्ट्रीय राजनीति में भी बड़ा बदलाव आएगा। सोनिया गांधी पुराने संसद भवन के सेंट्रल हॉल (संविधान सदन) में कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में बोल रही थीं।

राइट क्लिक

सवाल प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों के मौलिक अधिकार का है...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

भारत में शिक्षा कोचिंग के दुष्चक्र में फंसे छात्र-छात्राओं द्वारा हर साल आत्महत्याओं की बात नई नहीं है, लेकिन देश की राजधानी दिल्ली में एक नामी कोचिंग सेंटर की इमारत के बेसमेंट में पानी भरने से तीन भावी आईएएस बनने के इच्छुकों का बेमौत मारा जाना दरअसल तीनों की समूचे असंवेदनशील तंत्र द्वारा की गई हत्या है। इस घटना ने पहली बार यह मुद्दा शिद्दत से उठाया है कि आखिर छात्रों के भी मौलिक अधिकार है और उनकी हर हाल में रक्षा की जानी चाहिए। मानवीय गरिमा से रहित माहौल मे रहकर किसी परीक्षा को पास कर लेना भी अपने आप में नैतिक अपराध है। ऐसी ही एक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र अविनाश दुबे ने देश के सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश डी. वाय. चंद्रचूड़ को पत्र लिखकर गुहार की है कि वो छात्रों के मौलिक अधिकारों को संरक्षित करें। यह अधिकार स्वस्थ वातावरण में जीते हुए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने का है। हालांकि देश में छात्रों के कुछ मौलिक अधिकार तो पहले से हैं। ये है शिक्षा का अधिकार, समान व भेदभाव रहित अवसरों का अधिकार, सूचना व निर्भीक अभिव्यक्ति का अधिकार। लेकिन शिक्षा के व्यवसायीकरण ने इन अधिकारों में स्वस्थ और तनावरहित वातावरण में अध्ययन का अधिकार भी शामिल हो गया है। यह मुद्दा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि गिने-चुने कोचिंग संस्थानों को छोड़ दें तो अधिकांश में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे लाखों छात्र किन हालात में जी रहे हैं, किस तरह प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें बुनियादी सुविधाएं भी ठीक से मुहैया हैं या नहीं, इन पर शायद ही किसी का ध्यान जाता हो। खुद छात्रों और उनके अभिभावकों का ध्यान भी ज्यादातर इसी बात पर रहता है कि बच्चे का किसी तरह अच्छी नौकरी अथवा शिक्षा संस्थान में सिलेक्शन हो जाए बाकी बातें गौण हैं। कुछ दिनों की तकलीफ है। अंत भला तो सब भला। वो इस बात को भी दरकिनार कर देतें हैं कि कोचिंग संस्थान मोटी फीस लेने के बदले कैसी सेवाएं दे रहे हैं। ये कोचिंग संस्थान केन्द्र सरकार की उस गाइड लाइन का पालन कर भी रहे हैं या नहीं, जो ऐसे कोचिंग संस्थानों में आधारभूत सुविधाएं तथा सेवाएं देने के लिए बनाई गई हैं। हालांकि इसमें वो मानसिक दबाव शामिल नहीं है, जिसके कारण हर साल कई बच्चे बीच कोचिंग में ही आत्महत्या कर न केवल खुद की जीवन लीला समाप्त कर लेते है बल्कि उन मां बाप को भी जीवन भर का जख्म दे जाते हैं, जो किसी तरह पेट काटकर अपने लाडले या लाडली को कुछ बनाने के लिए मुंह मांगा पैसा खर्च करते हैं।

दरअसल प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग का कारोबार और इसके पीछे का मनोविज्ञान भारत में अब एक विशाल उद्योग और कारोबार का रूप ले चुका है। कोचिंग भी मुख्यतः दो तरह की होती है। पहली नौकरियों की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तो दूसरी श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए। ये सिलसिला शिक्षण संस्थान में प्रवेश से लेकर अच्छी नौकरी पाने तक जारी रह सकता है। देश में आज 68 हजार118 रजिस्टर्ड कोचिंग संस्थान चल रहे हैं और इनमें हर साल करीब 3 लाख छात्र कोचिंग लेते हैं। अनरजिस्टर्ड कितने हैं, इसकी जानकारी नहीं है। राजस्थान का कोटा शहर सबसे बड़ा कोचिंग हब है, जहां 146 कोचिंग सेंटर हैं। कोचिंग संस्थान छात्रों को परीक्षा पास कराने के लिए अपने यहां अच्छे ट्यूटर, पेपर सॉल्व करने की तकनीक, विषयवार अध्यापन, मॉक इंटरव्यू आदि आयोजित करने का दावा करते हैं। ये तस्वीर पेंट की जाती है कि उनके यहां एडमिशन लेने पर जन्नत का द्वार खुल जाएगा। प्रतियोगी परीक्षाओं के नतीजे आने के तत्काल बाद अखबारों में कोचिंग संस्थानों के बड़े- बड़े विज्ञापन छपते हैं, जिसमें सफल छात्रों की तस्वीरें और रैंक छापकर नए क्लायंट्स को आकर्षिक किया जाता है। ये कोचिंग में ऑन लाइन और ऑफ लाइन दोनो होती है। ऑफ लाइन विद्यार्थियों के रहने के लिए होस्टल, मेस तथा लायब्रेरी सुविधा होने का भी दावा किया जाता है। लेकिन हकीकत में ये सुविधाएं कहां और कितनी गुणवत्तापूर्ण होती हैं, यह बड़ा सवाल है। कई जानकारों का मानना है कि अगर स्कूल कॉलेजों में अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाए तो कोचिंग संस्थानों की अमरबेल पनप ही नहीं सकती। लेकिन वो एक अलग कहानी है। एक अनुमान के अनुसार आज भारत में कोचिंग उद्योग आज 58 हजार करोड़ रू. का है, जो 15 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रहा है। अगले चार सालों में इसके 1.33 लाख करोड़ रू. का हो जाने की संभावना है। कारण वही कि ज्यादा से ज्यादा लोग सरकारी नौकरी और बेहतर शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लेना चाहते हैं। क्योंकि यही सुरक्षित भविष्य की गारंटी है। हालांकि इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि कोचिंग उद्योग करीब 10 लाख लोगों को रोजगार भी दे रहा है।

इन सबके बावजूद दिल्ली की घटना शायद अपने आप में पहली ऐसी हिला देने वाली घटना है, जिसमें जिसमें एक किताबघर ही मौत के घर में तब्दील हो गया हो। इस भयंकर हादसे में जान गंवाने वाले तीनो विद्यार्थी श्रेया यादव, तान्या सोनी और नेविन डेल्विन अपने- अपने राज्यों से दिल्ली इस उम्मीद में आए थे कि वो कोचिंग लेकर यूपीएससी की कठिन परीक्षा पास कर आईएएस बनेंगे। लेकिन सिस्टम की लापरवाही ने उनके सपनो पर पहले ही गंदा पानी फेर दिया। आश्चर्य की बात तो यह है कि दिल्ली के राजेन्द्र नगर में जिस प्रतिष्ठित राउज आईएएस कोचिंग सेंटर में यह सब हुआ,उसे देश का पहला कोचिंग सेंटर माना जाता है। इसकी स्थापना 1953 डॉ. एस राव ने राजनीति विज्ञान की कोचिंग के रूप में कनाट प्लेस में की थी। बाद में यहां यूपीएससी परीक्षा की तैयारियों की कोचिंग भी शुरू हुई। अब इस कोचिंग संस्थान के मालिक अभिषेक गुप्ता हैं। संस्थान का ध्येय वाक्य है 'शिक्षा कभी बेकार नहीं जाती।' इस संस्थान का दावा है कि 2024 में यूपीएससी में सफल छात्रों में से 281 छात्र राउज स्टडी सर्कल के हैं। शायद यही कारण है कि बच्चे इस संस्थान की बेसमेंट में बनी असुरक्षित लायब्रेरी में भी बैठकर पढ़ने में मशगूल थे और जब अचानक नाले का पानी वहां भरने लगा तो बच कर बाहर भी नहीं निकल सके। क्योंकि बिजली नहीं होने से बाहर निकलने का गेट भी जाम हो गया था।

यहां सवाल यह भी है कि बेसमेंट जहां अमूमन पार्किंग, स्टोर आदि होता है, में लायब्रेरी बनाने का क्या औचित्य है? यह इस बात का भी परिचायक है कि हम भारतीयों के लिए पुस्तकालय का कितना महत्व है? किताबें हमारे घरों अथवा इमारतों में कहां जगह पाती हैं? इस हादसे के बाद सोया प्रशासन और बेपरवाह सरकार भी जागी है। देरी से जागने वालों में वो अफसर भी हैं, जो शायद किसी कोचिंग के बाद परीक्षा पास कर नौकरी में आएं हों। नाराज कोचिंग छात्रों के आंदोलन और व्यापक आलोचना के बाद कोचिंग संचालकों, बिल्डिंग मालिक और अन्य जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। 20 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार भी किया गया है। लेकिन यह सब चिड़िया खेत चुग जाने के बाद भी बातें हैं।

यहां मूल मुद्दा यह है कि क्या सरकारें कोचिंग संस्थानों पर यह दबाव बना पाएंगी कि वो इस काम को महज अंधी कमाई का धंधा न मानकर मूलभूत और गुणवत्तापूर्ण सेवा के रूप में लें। क्योंकि कोचिंग संचालकों का अपना जाल है और पहुंच है। जबकि कोचिंग में पढ़ रहे छात्रों का कोई देशव्यापी संगठन नहीं है, जो उन्हें इंसाफ दिलाने के लिए लड़ सके। कोई विद्यार्थी कोचिंग के बाद भी प्रतियोगी परीक्षा पास होता है या नहीं, यह अलग बात है, लेकिन जीने के सेहतमंद माहौल में परीक्षा की तैयारी करने के उसके मौलिक अधिकार की संरक्षा तो होनी ही चाहिए। दिल्ली जैसे महानगरों में गरीब और मध्यम वर्ग के सैंकड़ों तंगहाली में भेड़ बकरी जैसे हालात में परीक्षा की तैयारी करते हैं। वो चुपचाप सहते जाते हैं। ऐसे लोगों का कभी कोई सर्वे हुआ हो, जानकारी में नहीं है। केवल उन लोगों की फोटो जरूर छपती है, जो परीक्षा पास कर गए हैं। लेकिन उन छात्र छात्राओ का क्या जिनके मानवीय गरिमा के साथ अध्ययन करने और जीने के संवैधानिक अधिकार का हनन सुनियोजित तरीके से हुआ है?

सांसद लालवानी के खिलाफ दायर याचिका में नोटिस जारी

इंदौर हाईकोर्ट में सुनवाई के बाद अगली तारीख 2 सितंबर लगी

इंदौर (एजेंसी)। सांसद शंकर लालवानी की इलेक्शन पीटीशन मामले में इंदौर हाई कोर्ट में बुधवार को सुनवाई हुई। सुनवाई के बाद कोर्ट ने संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किए हैं। मामले में अगली सुनवाई 2 सितंबर को होगी। लालवानी के खिलाफ चुनाव याचिका धर्मेन्द्र सिंह झाला ने दायर की है। उनके निर्वाचन को चुनौती दी गई है। झाला ने इंदौर लोकसभा चुनाव 2024 में निर्दलीय के रूप मे नामांकन भरा था।इसी तरह मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह द्वारा राजगढ़ के सांसद रोडमल नागर के विरुद्ध लगाई गई चुनाव याचिका में भी हाई कोर्ट द्वारा नोटिस जारी किए हैं। दिग्विजय सिंह की ओर से सीनियर एडवोकेट विवेक तनखा, संजय अग्रवाल, रवींद्र सिंह छाबड़ा ने पक्ष रखा।

इंदौर के 10 बड़े चौराहों का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

चौराहों पर ट्रैफिक सुधार के दिए निर्देश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर शहर में ट्रैफिक सुधार के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे है। सड़कों और फुटपाथ से अतिक्रमण के साथ चौराहों पर लेफ्ट टर्न चौड़ा करने, इंजीनियरिंग और तकनीकी सुधार भी किया जा रहा है। बुधवार को कलेक्टर आशीष सिंह ने अधिकारियों के साथ शहर के 10 चौराहों का निरीक्षण किया। इस दौरान इन्होंने चौराहों में ट्रैफिक को बेहतर करने के निर्देश दिए। कलेक्टर आशीष सिंह ने शुरूआत गीता भवन चौराहे से की। इस दौरान उन्होंने चौराहे के यातायात को देखा। इसके बाद मधुमिलन चौराहा, छावनी चौराहा, जीपीओ चौराहा, नवलखा चौराहा, भंवरकुआ चौराहा, चोइथराम चौराहा, चाणक्यपुरी चौराहा, अन्नपूर्णा रोड़, महू नाका चौराहा और गंगवाल बस स्टैण्ड चौराहा की ट्रैफिक व्यवस्था देखी। कलेक्टर ने मधुमिलन चौराहा पर रूक कर यातायात को सुगम बनाने के संबंध में अधिकारियों से विस्तार से चर्चा की। गंगवाल बस स्टैण्ड चौराहा सहित अन्य चौराहों को भी सुगम यातायात के अनुकूल बनाने के निर्देश दिए। कलेक्टर आशीष सिंह ने विगत जून माह में किए गये चौराहों के निरीक्षण के दौरान दिए गये निर्देशों के परिपालन की जानकारी भी ली।

सीएम हेल्पलाईन को लेकर इंदौर कलेक्टर का निर्देश

लापरवाही पाए जाने पर एक माह का वेतन होगा राजसात

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह ने निर्धारित समय पर सीएम हेल्पलाइन में आवेदनों के निराकरण नहीं मिलने पर अधिकारियों को कार्यवाई के निर्देश दिए है। कलेक्टर ने अधिकारियों से कहा कि अगस्त माह में सीएम हेल्प लाइन के तहत दर्ज अधिक से अधिक प्रकरणों का निराकरण हो। संबंधित अधिकारी की लापरवाही पाए जाने पर एक माह का वेतन काटा जायेगा। दरअसल 22 जुलाई 2024 को समयावधि प्रकरणों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी। बैठक में विभागवार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की समीक्षा की गई। समीक्षा में पाया गया कि कुछ विभागों की सीएम हेल्पलाईन में रैकिंग काफी पीछे एवं शिकायतों के निराकरण का प्रतिशत काफी कम हैं। निर्देश दिये गये है कि प्रकरणों के निराकरण पर विशेष ध्यान दें। माह अगस्त में विभाग की रैकिंग 40 से अधिक आने पर संबंधित विभाग के कार्यालय प्रमुख का कार्य नहीं तो वेतन नहीं के आधार पर एक माह का वेतन शासन पक्ष में राजसात किया जाएगा।

हम में जितने राम हैं, सब वनवास पर हैं!

इंदौर में अदब की महफ़िल ने सजाई शायरी की खूबसूरत महफ़िल

(जावेद आलम)

इंदौर। इंदौर वासियों ने एक बार फिर अपने अदब-नवाज़ मिज़ाज की मिसाल पेश की और भरी बरसात सिर पर लेते हुए शायरी की बारिश से तन-मन भिगोने पहुंच गए। शायरों ने भी उन्हें मायूस नहीं किया और खूबसूरत शेर सुनाए। कला-साहित्य को समर्पित शहर की तंजीम 'अदब-की-महफ़िल' ने एक दशक पूरे कर लिए। उसी का यह जश्न भी था।

सदारत कर रहे नोमान शौक़ जैसे धीर-गंभीर व मंझे हुए शायर ने इसका खूब फायदा उठाया। देर तक अपने चुनिंदा अशआर सुनाते रहे, जिनमें रूमानी, समाजी, सियासी विषयों सहित इंसान के अंदरूनी दर्द को बयां करते शेर भी थे।

कुछ न था मेरे पास खोने को
तुम मिले हो तो डर गया हूं मैं!

इतना ताकत का नशा अच्छा नहीं,
आदमी हो या ख़ुदा अच्छा नहीं!

किसी ने परचम, किसी ने लहजा, किसी ने हुलिया बदल लिया,
है दहशत ऐसी कि आशिक़ों तक ने अपना क़िबला बदल लिया!
(क़िबला ङ्क जिधर मुंह करके इबादत की जाती है)

हम में जितने राम हैं, सब वनवास पर हैं
हम में जितने रावण हैं, सब राजा हैं!

तसल्ली-बख्श बात यह रही कि ऐसे जदीद लबो-लहजे में अनूठे अलंकारों से सजी व आम श्रोता के लिए कुछ मुश्किल शायरी भी सामईन बहुत गौर से सुन रहे थे। खासकर पिछले हिस्से में मौजूद युवा पीढ़ी इसका लुत्फ़ ले रही थी और परंपरागत हॉल गुंजा देने वाले अंदाज के बजाय ओह... वाह... वाउ... उफ़्फ़ की मद्धिम दाद से बता रही थी कि वह शायर के जज़्बात तक पहुंच रही है।

हॉल में शायर की ठहरी हुई आवाज़ और सामईन की दबी-दबी दाद का अजीब सा समां बंध गया। हिजरत यानी घर छोड़ जाने की मजबूरी पेश करते उनके इन शेरों से तारीफ़ का शोर उठने लगा।

जाने किस उम्मीद पर छोड़ आए थे घर-बार लोग,
नफ़रतों की शाम याद आए पुराने यार लोग!

इस शेर ने भी खूब जादू दिखाया

किसने हमारे शहर पे मारी है रोशनी,
हर मकान के ज़ख्म से जारी है रोशनी!

उत्तर प्रदेश में जन्मे अबु धाबी के हो चुके शायर सैयद सरोश आसिफ़ ने भी मुशायराती लटके-झटकों से दूर ख़ालिस शायरी पर अपनी तवज्जो बनाए रखी। उनके अशआर में तजुर्बात की रेलमपेल नज़र आती है।

ख़ुसूसन उस से मिलने तो कभी कोई नहीं आता,
मगर दरबार की क़िस्मत कि उसे सबसे मिलना है!

जब भी गंगा के पार जाता है,
पाप तट पर उतार जाता है!

शेर में वो तस्वीर बनाई जा सकती है,
जो अंधों को भी दिखलाई जा सकती है!
बातों-बातों में अम्मी ने फिर पूछा है,
बेटा, क्या छुट्टी बढ़वाई जा सकती है!
हिम्मत कर के कूज़ागर से पूछ लिया।
क्या मिट्टी में रूह छुपाई जा सकती है!
(कूज़ागर - कुम्हार)

सरोश पता नहीं क्यों इतनी जल्दी में थे कि धड़ाधड़ शेर सुनाए जा रहे थे। सामईन दाद देने का मूड बनाएं, उससे पहले वह अगला शेर पढ़ देते थे। ग्वालियर के मदन मोहन दानिश भी अक्सर कामयाब रहते हैं। आसान और चुटकियों में समझ आने वाले शेर लगातार सुनाए चले जाते हैं। उन्होंने चेताया ...

हमें पता है मसरूफ़ हो बहुत फिर भी,
हमारी दस्तकें सुनते रहो ज़मीर हैं हम!

बहुत भरोसा लफ़्ज़ों पर मत किया करो,
कहने में जो छूट गया है, सुना करो!

इंसान के दुरंगेपन पर वार करता उनका यह शेर तो बार-बार सुना गया -

कोई हैरत या कोई अफ़सोस कुछ भी तो नहीं,
जबकि वह बिल्कुल नहीं हूं, जो बना रहता हूं मैं!

मुशायरों के साथ सोशल मीडिया पर भी छाए हुए अबरार काशिफ के ज़िम्मे निज़ामत (संचालन) थी। रवानी से वह मंझी हुई ज़ुबान बोले चले जा रहे थे। अपनी मशहूर नज़्म उर्दू से उन्होंने आगाज किया। फिर ग़ज़लों के शेर सुनाए।

ज़िंदा रहने की तरकीब निकाली है,
मैंने हर इक बात ग़ज़ल में ढाली है!

वह शख्स तो ज़हीन है किताब के बग़ैर भी,
सवाल के बग़ैर भी, जवाब के बग़ैर भी!

युवा शायर जुबैर अली ताबिश ने भी धाराप्रवाह शेर सुनाए। सोशल मीडिया से जुड़ा, उन्हें सुनने वाला एक वर्ग अलग है। पर वह भी इस बार जल्दी में लगे। शेर पर शेर सुनाते रहे। दाद जैसे उनके पीछे-पीछे चले। सामईन भी माने नहीं। बराबर दाद देते रहे। बीच-बीच में वे फरमाइशी कलाम भी सुनाते रहे।

काम कोई भी हो तेरा नाम होना चाहिए,
जो मिले उसको दिखाऊं, ज़ख्म ऐसा लगा!

उनके इस मशहूरे-ज़माना शेर को तो ख्वातीन (महिलाएं) से भी खूब दाद मिली

अब अगली बार आना तो बदन को छोड़कर आना,
मेरे कमरे में बिस्तर के अलावा भी बहुत कुछ है!

हास्य-व्यंग्य के शायर सुंदर मालेगांवी ने शायरात को चुटीले अंदाज़ में यह सीख दे डाली

करिश्मा दिखाना ग़ज़ल पढ़ते-पढ़ते
न पल्लू गिराना ग़ज़ल पढ़ते-पढ़ते!

ग़ाज़िआबाद की इक़रा अंबर ने सादगी से अच्छे शेर सुनाए,
जिस तरह शर्त वह लगाता है, ज़िंदगी अपनी हार बैठेगा!

युवा शायर अश्विनी मित्तल (मुंबई) कह गए

सारे इक्के खड़े हैं शर्मिंदा
बाजी जीती गई है जोकर से

'अदब की महफ़िल' की इस अदबी महफ़िल में दो बातें अनूठी रहीं। एक तो इसकी शम्अ ख्वातीन ने रोशन की। दूसरी, मुशायरा रात साढ़े नौ बजे संपन्न हो गया, जो रसिकों को खला भी। कार्यक्रम मदऊ (आमंत्रित) सुनकारों के लिए था और मुशायरा गाह में इंदौर के स्थापित व्यवसायी, कॉर्पोरेट्स व दीगर गणमान्य सुधीजन परिजनों सहित मौजूद थे।

नगर निगम में बजट सत्र के दूसरे दिन बजट चर्चा सवाल नहीं लेने पर कांग्रेस का हंगामा

5-10 मिनट के लिए तीन बार कार्यवाही स्थगित, फिर बहुमत से इंदौर का बजट पास

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर नगर निगम में बजट सत्र के दूसरे दिन बजट पर चर्चा नहीं हो सकी। दूसरे दिन भी कांग्रेस-भाजपा के पार्षदों ने जमकर हंगामा किया। सदन की कार्यवाही शुरू होते ही नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे ने कहा कि कांग्रेस के कई पार्षदों के सवाल शामिल नहीं किए गए। इस पर भाजपा पार्षदों ने यह कहते हुए हंगामा शुरू कर दिया कि कल जिन्हें निलंबित किया गया, उन्हें सवाल पूछने का अधिकार नहीं। दोनों दलों के पार्षदों के हंगामे के कारण सभापति ने कुल तीन बार पहले पांच मिनट, फिर दस मिनट और फिर पांच मिनट के लिए सदन की कार्यवाही स्थगित की। तीसरी बार कार्यवाही शुरू होते ही सभापति ने कहा कि मैं सदन की कार्यवाही सुचारू चलाने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन ये संभव नहीं दिख रहा। इसके बाद उन्होंने बहुमत से बजट पास होने की घोषणा की। इसके बाद सभी पार्षद, महापौर, सभापति राष्ट्रगान के लिए खड़े हो गए। इससे पहले निगम की अपील समिति के खाली पद पर इंदौर कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष सिंह ने निर्वाचन की प्रकिया पूरी कराई। अपील समिति के सदस्य पद पर निर्विरोध भरत सिंह रघुवंशी का निर्वाचन हुआ। रघुवंशी वार्ड क्रमांक 70 के पार्षद हैं।

10 मिनट बाद कार्यवाही शुरू, हंगामा, फिर पांच मिनट के लिए स्थगित

10 मिनट के स्थगन के बाद सदन की कार्यवाही फिर शुरू की गई। सभापति ने विपक्ष के नेता चिंटू चौकसे को चर्चा के लिए आमंत्रित किया। जैसे ही वे बोलने के लिए खड़े हुए बीजेपी पार्षद हंगामा करने लगे। वे माफी मंगवाने पर अड़े। बोले पहले माफी मांगो फिर कार्यवाही शुरू करने देंगे। लेकिन जैसे ही चौकसे ने बोलना शुरू किया भाजपा पार्षदों ने हंगामा शुरू कर दिया। सभापति ने फिर पांच मिनट के लिए सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी।

सभापति की डेस्क के नीचे बैठे कांग्रेसी पार्षद

कांग्रेसी पार्षद सभापति की डेस्क के नीचे बैठ गए। जिसके बाद बीजेपी पार्षद भी बैठकर हंगामा करते रहे। कांग्रेसी पार्षद सभापति से मांग करने लगे कि जब कल हमें सदन से बाहर किया तो आज बीजेपी पार्षदों को भी हंगामा करने पर बाहर करो।

माफी मांगने की बात पर भाजपा पार्षदों का हंगामा

चिंटू चौकसे सभापति के पास पहुंचे तो बीजेपी के भी सभी पार्षद सभापति के पास पहुंच कर हंगामा करने लगे। इसके बाद कांग्रेस के सभी पार्षद भी सभापति के पास पहुंच गए। भाजपा पार्षद माफी मांगने की बात पर हंगामा करते रहे। इसके चलते सभापति ने 10 मिनट के लिए परिषद की बैठक स्थगित कर दी।

महापौर ने कहा कल के घटनाक्रम पर कांग्रेस खेद व्यक्त करे तो स्वस्थ बहस को तैयार- महापौर ने कहा कि यह इंदौर की तासीर नहीं रही की सभा में श्रद्धांजलि दे रहे हों और उस समय भी कांग्रेस हंगामा कर रहे थे। कांग्रेस पार्षदों का जैसा कहना है कि उन्होंने बाहर बैठ कर बजट सुन लिया था तो इनके सुझाव भी बाहर से लिख कर मंगवा लीजिए। यदि कांग्रेस पार्षद कल के घटनाक्रम पर खेद व्यक्त करते हैं तो हम स्वस्थ बहस के लिए तैयार हैं। नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे ने कहा, श्रद्धांजलि सभा में हमने कोई गड़बड़ी की हो और उसका कोई एक भी वीडियो बता दीजिए। हम गलत होंगे तो माफी मांग लेंगे। इस पर भाजपा पार्षद माफी मांगने की बात पर अड़ गए। और हंगामा शुरू कर दिया।

भाजपा पार्षदों ने सभापति को घेरा, कांग्रेस ने की निलंबन की मांग

कांग्रेस पार्षदों के सवाल पूछने के मामले का विरोध कर रहे भाजपा पार्षदों ने सभापति का घेराव कर दिया। वे आसंदी तक पहुंचे तो कांग्रेस पार्षदों ने उनके निलंबन की मांग कर दी। कहा कि भाजपा पार्षदों ने सदन की मर्यादा भंग की है। इन्हें निलंबित किया जाए।

सदन में लगे इंकलाब जिंदाबाद, मोदी-मोदी के नारे- इंदौर बीजेपी पार्षद जीतू यादव ने कहा की 60 साल से कांग्रेस देश में भ्रष्टाचार कर रही है।

युवा रचनात्मकता और 'विश्वरंग'

कुणाल सिंह

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा भारत से बाहर होने वाला यह पहला 'विश्वरंग' होगा। जिस उत्साह के साथ मॉरीशस स्थित विश्व हिन्दी सचिवालय, रवीन्द्रनाथ टैगोर केन्द्र और महात्मा गाँधी संस्थान समेत अन्यान्य संस्थाओं ने मॉरीशस में इस आयोजन के लिए तत्परता दिखाई है, जिस फराखदिली से वहाँ के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और उप-प्रधानमंत्री ने आयोजन में शिरकत की हामी भरी है, इससे निश्चित रूप से 'विश्वरंग' के मंसूबे बुलन्दियों को छूयेंगे।

'विश्वरंग' के छठे संस्करण का आयोजन सन्निकट है। इस बार यह मॉरीशस की धरती पर आयोजित हो रहा है। वर्ष 2019 में पहली बार भोपाल में आयोजित होने वाला 'विश्वरंग' अब पहली बार भारत की सरजमीं से बाहर आयोजित हो रहा है। हालाँकि विगत कुछ वर्षों से 'विश्वरंग' के साथी देश भोपाल के मुख्य आयोजन के पूर्वरंग के रूप में अपने-अपने देशों में साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन करते रहे हैं, किन्तु रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा भारत से बाहर होने वाला यह पहला 'विश्वरंग' होगा। यह एक अग्रगामी कदम है, जिसके अलग निहितार्थ हैं।

मुझे याद है, पहली बार जब 'विश्वरंग' की परिकल्पना की गयी थी, यह ऐसे महास्वप्न की मानिन्द था जिसका पूरा होना एकबारगी असम्भव सा प्रतीत होता था. अलबत्ता इसके स्वप्नद्रष्टा संतोष चौबे शुरू से ही आश्वस्ति से पूरमपूर थे। वे बारहा कहा करते हैं- विश्व को जोड़ने में कलाओं और साहित्य का कितना महत्व है, इसका अभी ठीक से मूल्यांकन होना बाकी है। हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ कलात्मक संवेदना की भी उतनी ही जरूरत है। हिन्दी के आगे वैश्विक स्वरूप ग्रहण करने की आज जितनी सम्भावनाएँ हैं, उतनी पहले कभी नहीं रहीं। तकनीकी विकास भी इसमें महत्त्वपूर्ण योग दे रहा है। संतोष चौबे का उद्देश्य महज साहित्यिक आयोजन करके ही इतिश्री समझ लेना कतई नहीं रहा। 'विश्वरंग' के परिपार्श्व में अगर हम देश भर में आयोजित किये जाने वाले तमाम लिट्-फेस्टों को रखकर देखें तो अन्तर साफ-साफ परिलक्षित हो जाएगा। शहर केन्द्रित साहित्यिक आयोजनों की तरह 'विश्वरंग' का अन्तिम लक्ष्य महज स्पॉन्सरशिप हासिल करना कभी नहीं रहा। हम शुरू से एक ऊर्ध्वगामी लक्ष्य को लेकर चले हैं और यह हर्ष की बात है कि भोपाल से शुरू हुई यह यात्रा अब देश की सरहदें लाँघ चुकी है। संतोष चौबे द्वारा देखे गये 'विश्वरंग' के इस स्वप्न को पूरा करने की दिशा में उनके मित्र स्व. महेन्द्र गगन, मुकेश वर्मा, बलराम गुमास्ता, लीलाधर मंडलोई, अशोक भौमिक, विनय उपाध्याय आदि उनके हमकदम थे। हमारी तरह के सैकड़ों युवाओं का साथ उन्हें अपने स्वभाव की मृदुता की वजह से सहज सुलभ हुआ। वे अपने मित्रों से अक्सरहाँ कहा भी करते हैं आगे इन्हीं लोगों को करना है भाईसाब, इन्हें साथ रखिये। स्टीफन हॉकिंग की किताब 'ऑन द शोल्डर्स ऑफ जाएंट्स' के शीर्षक का हवाला देते हुए वे कहते हैं- ये युवा हैं, हमारे अनुभव-रूपी कन्धों पर बैठे हैं. इसलिए इनकी दृष्टि हमसे आगे जाएगी ही। आज यह देखते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि संतोष चौबे के निर्देशन में 'विश्वरंग' कीकमान को अपने युवा हाथों में लेने के लिए अगली पीढ़ी के रूप में डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, पल्लवी राव और नितिन वत्स पूरी तरह से तैयार हो चुके हैं।

वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान जब एक बार को मन में यह खयाल आ रहा था कि 'विश्वरंग' को अगली बार के लिए स्थगित कर दिया जाए। विदित हो कि ये सिद्धार्थ चतुर्वेदी और अदिति वत्स ही थे, जिन्होंने इसे ऑनलाइन आयोजित करने की सोची और 'विश्वरंग' के नैरन्तर्य को बनाये रखा। आज 'विश्वरंग' के स्वरूप में जितने भी नवाचार हैं. सब इन्हीं का प्रदेय हैं।

'विश्वरंग' से जिस रचनात्मक ऊर्जा का सृजन हुआ, उसका प्रस्फुटन रवीन्द्रनाथ टैगोर के विभिन्न नये शिक्षण केन्द्रों- टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र, बहुभाषा अनुवाद केन्द्र, वनमाली सृजनपीठ, प्रवासी साहित्य शोध केन्द्र आदि में हुआ। इन केन्द्रों से निकलने वाली पत्रिकाओं में 'वनमाली कथा' का आज के साहित्यिक परिदृश्य में अपना महत्व है। प्रकाशन के मात्र तीसरे वर्ष में यह पत्रिका हिन्दी साहित्य समय की केन्द्रीय पत्रिकाओं में शामिल हो चुकी है। इसके विशेषांकों- नवलेखन विशेषांक, भारत भारती विशेषांक, स्त्री सृजनशीलता विशेषांक, वनमाली विशेषांक, युवा पीढ़ी विशेषांक आदि की भरपूर चर्चा होती रही है। विशेषकर 'वनमाली कथा' ने अपने नवलेखन विशेषांक और युवा पीढ़ी विशेषांक के द्वारा हिन्दी कहानी के परिदृश्य में एक नितान्त नयी पीढ़ी को स्थापित कर दिया है। पाठकों की माँग पर इन विशेषांकों के कई संस्करण प्रकाशित करने पड़े। 'विश्वरंग' ने युवा रचनाशीलता के जिस सर्वथा नये माहौल का सृजन किया था, 'वनमाली कथा' ने इन विशेषांकों के द्वारा उसे प्रश्रय देने का अभूतपूर्व कार्य किया है।

अब भविष्य में 'वनमाली कथा' अपनी चौथी वार्षिकी के अवसर पर 'विश्व युवा पीढ़ी विशेषांक' का प्रकाशन करने जा रहा है। यह हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में सम्भवतः पहली बार मुमकिन होगा कि नितान्त आज के वैश्विक परिदृश्य में, विभिन्न देशों की विभिन्न भाषाओं में सृजनशील युवा प्रतिभाओं की रचनाओं का हिन्दी में प्रकाशन हो। इसमें स्पेन, अर्जेंटीना, नाइजीरिया, रूस, जापान, कोरिया, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, फ्रांस, थाईलैंड, ब्राजील आदि 25 देशों के युवा कथाकारों की कहानियाँ और विभिन्न भाषाओं के 25 कवियों की 125 कविताओं की शमूलियत होगी।

उम्मीद की जा सकती है कि संतोष चौबे ने साहित्य, संस्कृति और कला के औजारों से पूरे 'विश्व' को एक 'रंग' में रँगने का जो संकल्प लिया है. 'वनमाली कथा' तथा साथी पत्रिकाएँ इस संकल्प कोपूरा करने में सहयोगी सिद्ध होंगी।

दुनिया भर के हिन्दी शिक्षण पर विमर्श

आज प्रमुख आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक देश के भाषिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप हिंदी शिक्षण के समूचे ढांचे को सुदृढ़ किया जाए

जवाहर कर्नावट

दुनिया भर में बसे हुए भारतवंशियों का जुड़ाव अपनी भाषा और संस्कृति से होने के कारण इन देशों में 'लिटिल इंडिया' के दर्शन हो जाते हैं। इन प्रवासी भारतीयों की एक प्रमुख चुनौती नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कारों से परिचित कराते हुए प्रवासी देश के साथ तादात्य बनाए रखना भी है। भारतीयता को बनाए रखने के प्रयासों में अपनी भाषा को विदेशों की परती पर फैलाने का कार्य भी इन प्रवासी भारतीयों ने बखूबी किया है। भारत की प्राचीन संस्कृति, परंपराओं और ऐतिहासिक ग्रंथों को समझने के लिए भी अनेक विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी में अध्ययन और शोध के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। इस प्रकार विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा तक पहुँच गई है। अनेक देशों में सामुदायिक गतिविधियों के रूप में भी हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। विश्व के प्रमुख देशों के भ्रमण के दौरान मुझे हिंदी भाषा

के शिक्षण तथा साहित्य संबंधी अध्ययन एवं शोध की समृद्ध परंपरा देखने को मिली। गिरमिटिया देशों मॉरिशस, फिजी,गयाना त्रिनिदाद टोबेगो, दक्षिण अफ्रीका के अलावा यूरोप अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में भी हिंदी शिक्षण की जड़ें गहरी हो चुकी हैं।

आज प्रमुख आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक देश के भाषिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप हिंदी शिक्षण के समूचे ढांचे को सुदृढ़ किया जाए। अन्य विदेशी भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा में विद्यार्थियों की संख्या लगातार कम हो रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री का अभाव वर्षों से बना हुआ है। दूसरी ओर भाषा से जुड़ी तकनीकी सुविधाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है।

भाषा प्रयोग के अवसर और क्षेत्रों में भी बदलाव हो रहा है। इस स्थिति में इन सभी देशों की दृष्टि भारत की ओर है। उनकी अपेक्षा है कि उन्हें हिंदी भाषा-शिक्षण को अधुनातन बनाने के लिए अधिक से अधिक संसाधन भारत से मिल सकें। इसमें भारत सरकार के विदेश मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय से सम्बद्ध संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे दूतावासों का सकारात्मक रवैया भी आवश्यक है। इन देशों के हिंदी प्राध्यापकों का यह भी स्पष्ट मत है कि भारत के सामजिक एवं शैक्षिक जीवन में हिंदी की उपेक्षा का प्रतिकूल प्रभाव विदेशों में हिंदी शिक्षण पर होता ही है। इसलिए यह भी आवश्यक है कि भारत में सभी स्तरों पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के गंभीर प्रयास हों।

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है और देश की प्रतिनिधि भाषा माने जाने के कारण हिंदी की भी। प्रवासी भारतीयों की सामाजिक और सांस्कृतिक सक्रियता तथा संबंधित देश की शिक्षण संस्थाओं में हिंदी के पठन-पाठन की शताब्दी से अधिक पुरानी शिक्षण परम्परा के कारण हिंदी विश्व के अधिकांश देशों में विद्यमान है और यह तो निर्विवाद है कि भारत के इतिहास,संस्कृति एवं परंपराओं के समुचित अध्ययन एवं अध्यापन हेतु हिंदी तथा संस्कृत भाषा से परिचय अपरिहार्य है। इन सभी तथ्यों के दृष्टिगत यह अत्यंत आवश्यक है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को समृद्ध करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए।

शिफाली

शहर के दरवाजे दुनिया की दस्तक

शहर में दुनिया कहाँ समाती है? लेकिन ये भी हुआ। मेरी खुशकिस्मती कि जागी आंखों के इस ख्वाब के गवाह हम भी हुए। देश-दुनिया के साहित्यकारों का जमावड़ा। साहित्य के उन पुरोधाओं के रुबरु होना जिन्हें शब्दों से जाना है, समझा है। कला-संस्कृति के मनीषी भी आए, लेकिन निजी तौर पर मेरे लिए विश्व रंग का जो तजुर्बा उम्र भर की धरोहर है वो अनुभव है दुनिया भर में हिंदी लिख, पढ़ रहे, बोल रहे और हिंदी की चिंता कर रहे हिंदी सेवियों से साक्षात्कार।

जिस शहर में पटियों पर जमती हों अदब की महफिलें। जिस

शहर की फिज़ाओं में शायरी घुली हो। झील किनारे इत्मीनान में बैठे उस शहर में चढ़ते जाड़े के दिनों पूरी दुनिया मेहमान हुई थी। सात दिन, सात रंग। कला और संस्कृति। धाराओं, वादों, विवादों में बँटा साहित्य एक साथ हुआ था। नई-पुरानी ही नहीं, सरहद के पार की भी हिंदी नई धज के साथ आई थी। विश्वरंग के आंगन में बिखरी रौनकें थी सारी। जब 'विश्वरंग' का पाँचवा जलसा परवान चढ़ने को है तब वो पहले क़दम के मंज़र याद आना लाज़मी है।

यूँ देखिए तो दिल्ली को दरकिनार कर भोपाल जैसे शहर में साहित्य-कला और संस्कृति के आयोजन के साथ दुनिया की मेजबानी जोख़िम था। बड़ा जोख़िम। दुनिया तक पहुंचने की हसरत होती है अमूमन लेकिन दुनिया को अपने दरवाजे ले आने का जोख़िम कौन उठाता है? रवीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल) के कुलपति संतोष चौबे ने ये जोख़िम उठा लिया। इस सपने को जमीन पर लाना बिल्कुल वैसा था कि ग्लोबल को लोकल कनेक्ट दिया जाए। शहर में दुनिया कहाँ समाती है? लेकिन ये भी हुआ। मेरी खुशकिस्मती कि जागी आंखों के इस ख्वाब के गवाह हम भी हुए। देश-दुनिया के साहित्यकारों का जमावड़ा। साहित्य के उन पुरोधाओं से रुबरु होना जिन्हें शब्दों से जाना है, समझा है। कला-संस्कृति के मनीषी भी आए, लेकिन निजी तौर पर मेरे लिए विश्व रंग का जो तजुर्बा उम्र भर की धरोहर है वो अनुभव है दुनिया भर में हिंदी लिख, पढ़ रहे, बोल रहे और हिंदी की चिंता कर रहे हिंदी सेवियों से साक्षात्कार। दक्षिण अफ्रीका, फिलीपींस, बर्मा, श्रीलंका, रुस... इन देशों से आए प्रतिनिधियों की जुबान पर उतरते हिंदी के अल्फाज। विश्व रंग के जरिए ये आईना भी था कि देखिए तो जरा आपके अपने मुल्क में अंग्रेजी के आगे जो संकोच की जुबान है, वो हिंदी देश के कितने हिस्सों में आत्मीय बनी हुई है। दूसरा तजुर्बा नई वाली हिंदी का। विश्व रंग के आयोजन की बड़ी सफलता ये भी कि उदार मन से इस आंगन में हर एक का स्वागत था। उस नई वाली हिंदी का भी, जिसने कई सारे अवरोध तोड़े हैं। जिसकी शर्त है कि हिंदी पुल बनें। पहुंचे नई पीढ़ी तक। भले नई पौध के अंदाज उनकी जुबान में पहुँचे। लिहाजा देश के वरिष्ठ रचनाकारों-साहित्यकर्मियों के साथ वो युवा लेखक भी विश्वरंग के फ़लक का सितारा बनें। साहित्य से इतर सिनेमा, मीडिया, सोशल मीडिया, पर हिंदी के बदलते तेवर और इनके बीच नई कोंपल की तरह थर्ड जेंडर कवि....जिन्हें भाषा से नहीं, भाव से सुना गया।

कविता में आंखें खोलता....चढ़ती दोपहर में नज़्मों-ग़ज़लों के संग दौड़ लगाता..... ढलती सांझ सरहद पार से आए हमज़ुबानों से बतियाता.... और कहानियों की थपकी लिए सो जाता। भोपाल में बीते ये दिन हौसला देकर गए हैं कि दुनिया को समेटे साहित्य-कला के जलसे अब दिल्ली की सरहद पार कर चुके हैं। कहिए आमीन....विश्व रंग की पाँचवीं किस्त के लिए.....

विश्वरंग की सौगात बने 'वनमाली' के दस्तावेजी ग्रंथ

ज्योति रघुवंशी

दस्तावेजीकरण की श्रृंखला में हमारी आगामी परियोजनाएँ हैं- कथा विश्व, कविता देश, कविता मध्यप्रदेश, व्यंग्य मध्यप्रदेश जैसी महती परियोजनाओं पर हम अनवरत कार्य कर रहे हैं साथ ही प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य पर कथा प्रवास परियोजना पर भी कार्य जारी है।

'विश्वरंग' का एक महत्वपूर्ण रचनात्मक घटक है- वनमाली सृजन पीठ जिसने इस महोत्सव को अनेक दस्तावेज़ी ग्रंथ साझा किये हैं। एक नया उत्साही परिवेश रचने की पहल इस बीच आकार ले सकी है।

वनमाली सृजन पीठ लगभग 35 वर्षों का साहित्य एवं कलाओं में काम करने का जो अनुभव है वह बताता है कि आखिर सभी कलाओं और अनुशासनों में एकतरह की आपसदारी बनती है और उसे पहचानना ही अपने कलात्मक क्षितिज का विस्तार करना है। इसी तरह अन्य अनुशासन भी कलात्मक विधाओं में हस्तक्षेप करते हैं। मसलन उपन्यास और कहानी में कई समकालीन तथा युवा रचनाकारों के यहां आप को ऐसी शैलियों और अनुशासनों की छाया मिल जायेगी जिन्हें पहले उपन्यास या कहानी के डोमेन में नहीं रखा जाता था, उनमें आप इतिहास की, चित्रकला की, फिल्म तकनीक की, नाटक की और दार्शनिक निष्कर्षों की छाया पाते हैं। असल में ज्ञान-विज्ञान का जो विस्फोट हमारे आसपास हुआ है, उसने बहुत सारी पुरानी सीमा रेखाओंको तोड़ा है। उपरोक्त सभी अनुशासनों का विभिन्न सत्रों को आयोजन में शामिल करने का लक्ष्य इस नये उभरते मानचित्र को पहचानना है।

वर्ष 1990 से 30 वर्षों की लंबी यात्रा में वनमाली सृजनपीठ ने बहुत सारे अनुभवों और मित्रों को जोड़कर एक ऐसा समावेशी वातावरण का निर्माण किया, जिसमें प्रत्येक विचारधारा के लोग साथ बैठकर बातचीत कर सकें, पहला विश्वरंग इसी समावेशी विचारधारा की संचित पूंजी था।

दस्तावेजीकरण विश्वरंग का एक प्रमुख लक्ष्य रहा है। विश्वरंग 2022 तक आते-आते कई ऐसे प्रयास किये गये हैं जो इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हिन्दी की लगभग 200 वर्षों की कथा परम्परा को समेटते हुए, 600 से अधिक कथाकारों तथा आलोचकों के साथ, 18 खंडों में 'कथादेश' का प्रकाशन, अविभाजित मध्यप्रदेश 6 खंडों में 'कथा मध्यप्रदेश' का प्रकाशन और भोपाल के 187 कथाकारों के साथ 'कथा भोपाल' का प्रकाशन दस्तावेजीकरण के ऐसे ही महती प्रयास हैं। हिन्दी में विज्ञानकथाओं की जरूरत को महसूस करते हुए 6 खंडों में 'विज्ञानकथा कोश', विज्ञान कविताओं का 3 खण्डों में 'विज्ञान कविता कोश', एवं बच्चों की दुनिया को समृद्ध बनातेहु ए 11 खंडों में 'बालकविता कोश' का भी प्रकाशन किया गया है।

'विश्वरंग' के अंतर्गत चार पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। जहाँ 'विश्वरंग' पत्रिका वैश्वकि संदर्भों को समेटती त्रैमासिक पत्रिका है वहीं 'वनमालीकथा' कथा केन्द्रित पत्रिका है जिसने थोड़े ही समय में 'कथाविश्व' में अपना स्थान बनाया है। कला पर केन्द्रित 'रंगसंवाद' पिछले बारह वर्षों सेप्र काशित है तो हिन्दी में विज्ञान विषयों पर केन्द्रित पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' देश की एकमात्र पत्रिका है जो पैंतीस से अधिक वर्षों से प्रकाशित है।वनमाली सृजन केन्द्रों की रचनात्मक गतिविधियों पर केन्द्रित बुलेटिन वनमाली वार्ता का मासिक प्रकाशन किया जाता है। जिसमें सभी केन्द्रों की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है।

दस्तावेजीकरण की श्रृंखला में हमारी आगामी परियोजनाएँ हैं- कथा विश्व, कविता देश, कविता मध्यप्रदेश, व्यंग्य मध्यप्रदेश जैसी महती परियोजनाओं पर हम अनवरत कार्य कर रहे हैं साथ ही प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य पर कथा प्रवास परियोजना पर भी कार्य जारी है।

विश्वरंग के अंतर्गत पूर्व में पुस्तकयात्राएं भी आयोजित की गई हैं जिन्हें व्यापक रूप से सराहा गया है पुस्तक यात्रा इस भ्रम को तोड़ती है कि किताबों के पाठक कम हो रहे हैं।गाँव-कस्बों में इन यात्राओं को हाथों-हाथ लिया या।हिन्दी और भारतीय भाषाओं को विश्व में उचित स्थान मिले और रचनात्मकता को विस्तार मिले।यही विश्वरंग की आवाजहै। विश्वरंग 2024 में आप सभी का स्वागत है।

मॉरीशस के रंगमंच का पहला नायक : अभिमन्यु अनत

विनय उपाध्याय

हिन्दी की अधिकांश बिरादरी जिस अभिमन्यु अनत को 32 उपन्यास और 8 कहानी संग्रहों के लेखक के रूप में जानती है, उसकी शिनाख्त सिर्फ़ कथा साहित्य भर से पूरी नहीं होती। अभिमन्यु का रचना संसार इससे इतर नाट्य साहित्य तक फैला है।

सात सितंबर सन् 2002... मॉरीशस की हिन्दी प्रचारिणी सभा का सभागार... सुबह के 11 बजे हैं और समकालीन साहित्य सम्मेलन के 26 वें अधिवेशन के शुभारंभ क्षणों का साक्षी बनने का सौभाग्य मुझ सहित भारत से गये बारह सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल को मिल रहा था। दरअसल हम उस पल के मुंतज़िर थे जब मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस में हिन्दी के ध्वजाधारी मूर्धन्य लेखक अभिमन्यु अनत का आगमन होने वाला था। यह साहित्य के एक ऐसे नायक से प्रत्यक्ष होने का कौतूहल था जिसके यशः सिद्ध व्यक्तित्व का परोक्ष आकर्षण बरसों से मन-मानस पर छाया था। लगभग निर्धारित समय पर उनका आगमन हुआ। माधुर्य में लिपटी सौम्य आभा से आलोकित अभिमन्यु ने सबसे पहले दर्शक दीर्घा में बैठे हम प्रवासी लेखकों से सौजन्य भेंट की फिर पूरी हुई शुभारंभ की औपचारिकताएँ। अगले दिन खुद वे हम सबसे मिलने स्वयं हमारे होटल चले आए। ढेर सारी गपशप और ठहाके। इसी बीच भारत और मॉरीशस के साहित्यिक-सांस्कृतिक हालातों पर चर्चा।

अभिमन्यु अनत

बाईस बरस बाद फिर मॉरीशस की यात्रा का संयोग हो रहा है। इस बार दामन में साहित्य और कलाओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव 'विश्वरंग' की महक है। एक बड़ा सांस्कृतिक प्रयोजन है। अभिमन्यु अनत की स्नेहिल उष्मा का वह गुनगुना अहसास भी कहीं होगा पर सदैह वे हमारे बीच न होंगे। उनकी मृत्यु के बाद उनके लिखे-कहे का लेखा-जोखा पाकर एक नए और कुछ-कुछ अनचीन्हे अनत का अवतार सामने होता है। बहरहाल, हिन्दी के लगातार बढ़ते वैश्विक प्रभाव के बावजूद उनका सवाल था कि क्या वजह है कि अभी तक हिन्दी के किसी लेखक को नोबल पुरस्कार नहीं मिला? यह भी कि भारत में साहित्यिक खानाबंदी ने साहित्य को बहुत क्षति पहुँचाई है। उनका कहना था कि मॉरीशस का साहित्य सौभाग्य से 'वाद' के ग्रहण से मुक्त है। अनत ने इस क्रम में जोड़ा कि मॉरीशस की सांस्कृतिक धरोहर भारत से मिली पूर्वजों की संपदा है।

दिलचस्प यह कि उस दिन बातों ही बातों में खुलासा हुआ कि हिन्दी की अधिकांश बिरादरी जिस अभिमन्यु अनत को 32 उपन्यास और 8 कहानी संग्रहों के लेखक के रूप में जानती है, उसकी शिनाख्त सिर्फ़ कथा साहित्य भर से पूरी नहीं होती। अभिमन्यु का रचना संसार इससे इतर नाट्य साहित्य तक फैला है। तक़रीबन साठ बरसों की उनकी यशोगामी यात्रा में उन्होंने अनेक नाटक, एकांकी और दूरदर्शन के धारावाहिक लिखे। भारत में भी उनके एक बहुचर्चित नाटक 'गूंगा इतिहास' का ऐतिहासिक मंचन 1984 में हुआ था। दुर्भाग्य से उनके नाट्य कर्म की चर्चा कम ही हुई है।

निस्संदेह मॉरीशस के सांस्कृतिक पर्यावरण में नई रंग उर्जा का संचार करने में अभिमन्यु अनत के योगदान को याद रखा जाना चाहिए। हिन्दी पट्टी के रंगकर्मियों को यह जानकार भला लगेगा कि 18 अक्टूबर 1996 को महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस में अभिमन्यु अनत के नाटक 'उर्मिला' का मंचन हुआ था। उर्मिला का किरदार निभाने भारत से विशेष तौर पर प्रसिद्ध रंगकर्मी विभा मिश्रा का चयन किया गया था। उन दिनों विभा भोपाल में रहती थी। रंगमंडल भारत भवन की वरिष्ठ अभिनेत्री थी। हिन्दी रंग जगत में उनकी विशेष ख्याति थी। दर्शकों की मांग पर मॉरीशस की राजधानी पार्ट लुई के थिएटर में भी 'उर्मिला' का प्रदर्शन हुआ था।

अभिमन्यु सिर्फ़ नाट्य लेखक ही नहीं थे, वे निर्देशक और अभिनेता भी थे। अनत के साहित्यिक मित्र तथा लेखक-आलोचक डॉ. कमल किशोर गोयनका ने एक चर्चा के दौरान बताया था कि 'गूंगा इतिहास' नाटक भारतीय प्रवासी मजदूरों की बेबसी, दमन, शोषण तथा नाटकीय जीवन की एक झलक प्रस्तुत करता है। नाटक की विशेषता यह है कि इस गूंगी यातना में एक मुखर विद्रोह पनपता है, शोषण तंत्र से वह प्रश्न करता है, उसकी अमानुषीय व्यवस्था के प्रति विद्रोह करता है। मजदूरों में एक नई जाग्रति उत्पन्न होती है और वे लड़ाई को जारी रखते हैं। इसका पहला मंचन मॉरीशस में फरवरी, 1984 के 'फूलीहार' में हुआ और लगभग पन्द्रह हज़ार लोगों ने इसे देखा। अभिमन्यु अनत ने लिखा है कि 'फूलीहार' (वह स्थान जहाँ गोरे मालिक भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया के रूप में खरीदते थे) में कोई पन्द्रह हज़ार लोगों ने अपनी आँखों से अपने जीवन-मूल्यों, अधिकारों, भाषा संस्कृति, धर्म, रीति-रिवाज़ों तथा शील-मर्यादा पर हुए आक्रमणों को देखा। 'गूंगा इतिहास' की एक ख़ासियत यह भी है कि इसमें हिन्दी, भोजपुरी तथा फ्रेंच भाषा का संगम है जो हिन्दी के लिए एक नया रूप है। इससे नाटक और भी जीवंत हो गया है।

अन्य देशों की तरह मॉरीशस का इतिहास भी राजा-

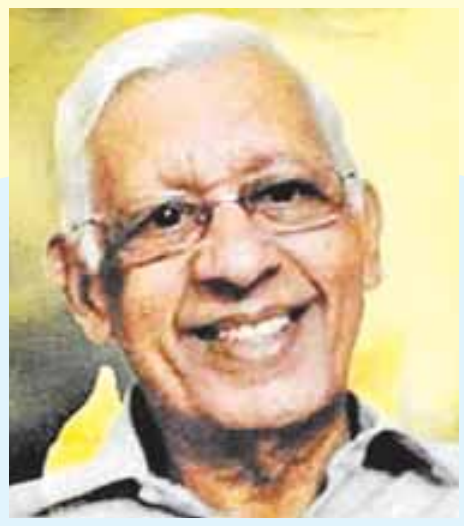

महाराजा, मंत्री-सेनापति, राज्यपाल-सिपहसालारों के वर्णन से भरा है और उसमें भारत से गये प्रवासी कुलियों और गुलामों के द्वारा बंजर भूमि को स्वर्ग में बदलने का नामोनिशान भी नहीं है। देश के इतिहास में कुलियों-दासों को खरीदने वाले गोरे मालिकों की चर्चा है, शोषित और गरीब मजदूरों के पसीने से तिजोरियाँ भरने वालों की कहानियाँ हैं और उनकी भी चर्चा है जो इतिहास में नाटकों से अपना गुणगान करा सकते थे। अभिमन्यु अनत ने लिखा है कि यही कारण है कि प्रवासी भारतीयों के आगमन, उनके संघर्ष, उनकी यातनाओं, दारुण दंडों की कहीं कोई सही चर्चा नहीं मिलती। वैसे तो सन् 1505 से भारतीयों के मॉरीशस जाने के प्रमाण मिलते हैं, किन्तु मॉरीशस सरकार ने सन् 1834 को मॉरीशस में भारतीय मजदूरों के आगमन का वर्ष मानकर सन् 1984 में उनके आगमन की 150वीं वर्षीगाँठ की आयोजना की और इसका आरम्भ फरवरी, 1984 को 'गूंगा इतिहास' के मंचन से शुरू हुआ। मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ और शिक्षा मंत्री ने उस दिन घोषणा की कि प्रवासी भारतीयों की 150वीं वर्षगाँठ की शुरुआत 'गूंगा इतिहास' के मंचन से होती है, क्योंकि इतिहास ने यातना और शोषण भरी जिन बातों और तथ्यों को छुपाने का प्रयास किया था, उन्हें यह नाटक सामने लाने सफल हुआ है।

अभिमन्यु अनत को इस नाटक को लिखने में इतिहास के ग्रंथों और दस्तावेज़ों से कोई मदद नहीं मिली, लेकिन उस समय के कुछ लोग जीवित थे, जिनसे बातचीत करके इतिहास की इस मूक यातना की सत्यता की उन्हें वास्तविकता ज्ञात हुई। अभिमन्यु अनत ने लिखा है कि आज भी पीठ पर कोड़े खाने वाले लोग जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं, व्यभिचार से लेकर हर जुल्म को सह चुके आदमी आज भी किसी न किसी बस्ती में अपने मन और जेहन में इतिहास की इस कड़वाहट को लिए हुए हैं।

अभिमन्यु अनत ने 'अजन्ता' मंच (रंग समूह) के लिए लगभग 40 नाटक लिखे, उनका निर्देशन किया तथा अभिनय भी किया। दूरदर्शन पर उनके नाटक, एकांकी धारावाहिक रूप में दिखाये गये। दिनों तक ऐसे ही नाट्य-कर्म में व्यस्त रहे। उनकी व्यस्तता कुछ ऐसी रही कि उनके 'विरोध' (1977), 'तीन दृश्य' (1981), 'गूंगा इतिहास' (1984), 'रोक दो कान्हा' (1986) तथा 'देख कबीरा हाँसी' (1995) आदि नाटक ही प्रकाशित हो सके बड़ी मात्रा में उनके नाटक, एकांकी आदि अप्रकाशित हैं। अभिमन्यु अनत हिन्दी के सम्पूर्ण प्रवासी साहित्य में एक मात्र ऐसे नाटककार हैं, जिन्होंने लगभग 55-60 वर्ष रंगकर्म को दिये हैं। एक भरपूर रंग-मंडल की रचना की है। नाटकों की स्वयं रचना की, उनका निर्देशन एवं अभिनय किया यानि लेखन-मंचन निर्देशन अभिनय को एकसूत्र में पिरोया। हिन्दी नाटक को आधुनिक परिस्थितियों तथा समस्याओं से जोड़ा, सामाजिक एवं राजनीतिक नाटकों का नया युग शुरू किया। हिन्दू मिथक महाकाव्यों पर आधुनिक संदर्भों से पूर्ण नाटकों की रचना एवं मंचन कराया। अभिनेताओं की नई पीढ़ियों को तैयार किया और मॉरीशस में हिन्दी नाटकों के मंचन को एक राष्ट्रीय उत्सव बना दिया।

अभिमन्यु अनत के सृजनात्मक अवदान पर व्यापक शोध करने वाले डॉ. गोयनका के अनुसार मॉरीशस में जब टेलीविजन का आगमन हुआ तो अभिमन्यु ने अजंता नामक संस्था की स्थापना की। इस दल में तीस स्त्रियों को अभिनेत्री बनाकर शामिल करने में वे सफल हुए। आरम्भ में नारी पात्रों के अभिनय के लिये स्त्रियाँ तैयार नहीं होती थी, किन्तु 'अजंता' में वे इतनी अभिनेत्रियाँ बनाने में सफल हुए। मॉरीशस के परिवेश में अभिमन्यु की यह बड़ी उपलब्धि थी। अभिमन्यु अनत ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि नाट्य लेखन में मुझे दर्शकों की माँग पर समझौता करना पड़ता था, अतः ब्रेख्त, एनेस्को और बेकेट से प्रभावित होकर भी वैसे नाटक नहीं लिख सका, क्योंकि उन महान नाटककारों के सत्य को मेरे गाँव के दर्शक अपना सत्य कभी नहीं मानते। यही वजह है कि अपने नाटक में मैंने साहित्य को कम प्रवेश होने दिया है, सम्पर्क और संवाद को ज्यादा महत्व दिया है। अपने एक मित्र के सहयोग से जिस दिन मैंने हिन्दी नाटक को सरकारी स्तर पर युवा प्रतियोगिता में शामिल कराया, उस दिन मुझे अपने नाट्य-जीवन की सार्थकता का अनुभव हुआ। आज मॉरीशस में हिन्दी के पचासों रंगकर्मी हैं और हिन्दी रंगमंच पर बादल सरकार, विजय तेंदुलकर, गिरीश कर्नाड, मोहन राकेश आदि के साथ अभिमन्यु अनत तथा हिन्दी के नये नाटककारों के नाटकों का भी मंचन होता है और हर साल सरकार के द्वारा नाटक प्रतियोगिता का आयोजन होता है। भारत से मोहन महर्षि कई वर्षों तक मॉरीशस में रहे और उन्होंने हिन्दी नाटक के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

मॉरीशस में राजा हरिश्चन्द्र, रामायण, महाभारत आदि से सम्बन्धित नाटकों का बोलबाला था, किन्तु सन् 1940-50 के आसपास यह सब समाप्ति पर था। उस परम्परा की समाप्ति के 20-25 वर्ष बाद अनत ने हिन्दी रंगमंच को जीवन दिया, लेकिन यह झिझक बनी रही कि धार्मिक नाटकों के दर्शक आधुनिक समस्याओं पर लिखे नाटक को पसंद करते हैं या नहीं, लेकिन अभिमन्यु अनत ने सत्रह वर्ष की आयु में गाँव के कुछ मित्रों के साथ, 'अजन्ता आर्ट्स' संस्था की स्थापना की और अपना पहले नाटक 'परिवर्तन' को जब त्रिओले के शिवालय के प्रांगण में मंचित किया तो हज़ारों दर्शकों ने इसे देखा और उन्होंने नियमित नाट्य-मंचन की माँग की। इस नाटक के इश्तहार हाथ से लिखे थे और तीन मील लम्बे गाँव की लगभग सभी दुकानों पर चिपकाये गये थे। इन दर्शकों में अधिकांश ऐसे थे जिन्होंने पहली बार नाटक देखा था, परन्तु नाटक के जीवन्त तथा प्रभावशाली मंचन ने अभिमन्यु अनत को छोटी आयु में ही एक सफल नाट्य-लेखक, निर्देशक और अभिनेता के रूप में स्थापित कर दिया।

डिजीटल प्लेटफार्म : सारा जहाँ एक मंच पर

विकास अवस्थी

सृजन का अर्थ है नवाचार और नवाचार का अर्थ है परिवर्तन। विश्वरंग डिजिटल इस परिवर्तन का एक मंच है, जहाँ नई प्रतिभाओं को अपनी कला और साहित्यिक कौशल को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।

यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पहलू है डिजिटल प्लेटफार्म। विश्वरंग डिज़ीटल एक ऐसा मंच है जो लगातार देश और विदेश के रचनाकारों को जोड़ने का काम कर रहा है। वेबसाइट, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, स्पॉटिफाई जैसे माध्यमों के साथ मिलकर लगभग 10 लाख से अधिक फॉलोअर्स का एक बड़ा परिवार बनता है। विश्वरंग.कॉम पर भाषा, साहित्य, संगीत, नृत्य, कलाओं की रचनाएँ प्रकाशित की गई हैं। जिसमें 400 से अधिक वीडियो, पॉडकास्ट प्रकाशित किए गए हैं, यूट्यूब चैनल पर 1000 से अधिक वीडियो प्रकाशित किए गए हैं जहाँ साहित्य, कला, सिनेमा, रंगमंच, लोकगीत, बोलियाँ, आदिवासी साहित्य, कलाएँ, जैसे विषयों पर बातचीत, नृत्य प्रस्तुति, संगीत की प्रस्तुतियाँ प्रकाशित की गई हैं।

अलग-अलग क्षेत्रों की जानी-मानी हस्तियाँ जैसे अमीश त्रिपाठी, आशुतोष राणा, रसिका दुग्गल, नीलेश मिश्रा ,पवन कुमार वर्मा, अन्नू कपूर, अवध ओझा, चेतन भगत, अश्विन सांघी आदि से बातचीत आपको देखने को मिलती है।

एक प्रमुख कार्य जो विश्वरंग डिजिटल कर रहा है वह है नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना। लगभग 10 हजार से अधिक युवा रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ और प्रस्तुतियाँ भेजी हैं। आप अक्सर यह सुनते होंगे कि आजकल के युवा साहित्य और कलाओं में अपना योगदान

नहीं दे रहे हैं, रुचि नहीं दे रहे हैं। इसमें ही दो कदम आगे चलकर कुछ लोग यह भी कहते हैं कि आज का युवा अब जड़ों और संस्कृति से जुड़ा नहीं है। लेकिन विश्वरंग पर युवाओं की रचनाओं की संख्या देखकर यह बात सिरे से खारिज होती है। जब हमने राम विषय पर रचनाएँ आमंत्रित कीं तो सैकड़ों रचनाएँ प्राप्त हुईं जिनमें राम पर आधारित कविताएँ, गीत, कहानियाँ आदि प्राप्त हुईं। एक और उदाहरण से इसे समझते हैं, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती पर रचनाएँ आमंत्रित कीं तब भी सैकड़ों रचनाएँ हमें प्राप्त हुईं। ये दोनों उदाहरण इस बात को स्थापित करते हैं कि युवाओं में साहित्य और कलाओं को लेकर उत्सुकता है।

जब हम युवा रचनाकारों को अपनी रचनाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय मुद्दों पर विचार करते हुए देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कला और साहित्य के माध्यम से समाज में बदलाव की कितनी ताकत होती है।

सिर्फ रचनाकारों की बात नहीं बल्कि अच्छी रचनाओं को पढ़ने, सुनने, देखने के लिए लोग भी उतने ही उत्सुक रहते हैं। ऐसा सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी देखने को मिलता है। जब हम सहयोगी देशों के साथ विश्वरंग के कार्यक्रम विश्वरंग डिजिटल पर आयोजित करते हैं तब वहाँ के युवा रचनाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। फिर चाहे वह अमेरिका हो या कनाडा, यूके, कतर, चीन आदि देश हों। देश और दुनिया के रचनाकारों को एक मंच पर लाकर एक वैश्विक समुदाय बन रहा है जहां साहित्य और कलाओं के लिए सभी एक साथ आ सकते हैं। विश्वरंग.कॉम भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर लाने के अपने प्रयास को लगातार जारी रखे हुए है।

टैगोर की सांस्कृतिक दृष्टि का बहुमूल्य दस्तावेज : आनन्द धारा

'गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर इस मर्म को भली-भाँति समझ चुके थे कि कला ही ज्ञान की प्रयोगशाला है। इसलिए टैगोर के पूरे सांस्कृतिक चिन्तन में हमें ललित कलाएँ गले मिलती दिखाई देती हैं।'

मॉरीशस में हो रहे 'विश्वरंग' में गुरूदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की स्मृतियों का महकता गुलदान सज रहा है। वहाँ स्थित टैगोर स्मृति संस्थान के परिसर में जब रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल की ओर से भव्य प्रतिमा का अनावरण हो रहा है, तब उन दस्तावेज़ों को देखना भी समीचीन है जो गुरूदेव की सांस्कृतिक दृष्टि के जीवंत साक्ष्य रहे हैं। 'आनंद धारा' शीर्षक पुस्तक का इस अनुष्ठान में प्रकाशित होना निश्चय ही टैगोर के प्रति सच्ची प्रणति है। इस पुस्तक का संयोजन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र, भोपाल ने किया है। ऋषि आत्मा का वो अवतार थे गुरुदेव, जिन्होंने भारत भूमि को संस्कृति के स्वाधीन स्वर्ग में जगाने का उदघोष किया। कलकत्ता की जोड़ासांको हवेली में पहली किलकारी भरने वाला ठाकुरों का वंशज रबीन्द्रनाथ टैगोर, जिसकी विलक्षणता ने सारी दुनिया को चकित कर दिया। निराशा के निलय में जिसकी रौशन आवाज़ भरोसा बन जाती है- ''बुझ गये दीप, बुझने दो, तुम अपना हाथ बढ़ाना''।

प्रेम, करुणा और प्रकृति की घनी छायाओं से गुज़रते हुए टैगोर का चिन्तन मनुष्यता के आदर्श पर विश्राम लेता है। इस यात्रा में वे साहित्य के साथ संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला और सृजन की सभी विधाओं को साथ लेकर चले। यहाँ उनकी दार्शनिक मेधा का दिव्य दर्शन होता है। वे हमें एक भावयोगी की तरह दिखाई देते हैं। शिक्षा और कला को लेकर उनके प्रयोगों की जीवन्त पाठशाला को दुनिया ने शान्ति निकेतन के रूप में देखा। वे मानते थे कि हमारा कोई भी सांस्कृतिक चिन्तन प्रकृति और प्रेम के बिना अधूरा है। पूरी मनुष्यता इसी बुनियाद पर टिकी है। आज जब आत्मनिर्वासन के अँधेरे में धकेल दिये जाने को दुनिया अभिशप्त है तब अपनी आत्मा को बचा लेने के लिए कराहती मनुष्यता के पक्ष में टैगोर अदम्य साहस की कुंजी देते हैं- ''ऐक्ला चालो रे''।

किसी ने सच ही कहा है कि सच्चे ज्ञानी को वाक् (यानी सिर्फ़ वचनों में) नहीं, बल्कि आचरण में देखना चाहिए। वास्तविक आध्यात्मिक परम्परा में ज्ञान ही आचरण है। टैगोर ने बहुत पहले ही जैसे इस सत्य को जान लिया था इसलिए वे प्रयोग में उतरे।

तमाम बन्धनों के परे मुक्ति की आकांक्षा के गीत गाते हुए वे मानवीय गरिमा का मनोहारी छन्द रचते हैं- ''आनन्द धारा बहे रे जग में''। जीवन के तलछट में यह जो आनन्द की अभीप्सा है, यह संकीर्णता की साँकलों को खोलकर ही पूरी की जा सकती है। ''उत्सव आमार जाति, आनन्द आमार गोत्र''। कितना हार्दिक और सारभूत कथन है। अजीब निराशा, हताशा, बेचैनी और बुझापन जीवन की मुस्कानों को इस समय लील रहा है तब रबीन्द्रनाथ के इस उदघोष को बार-बार सुना जाना चाहिए। जिस महादेश का परिचय ही उत्सव और आनन्द है वहाँ अवसाद से मुक्ति का मार्ग भी यही है। टैगोर इस मंत्र को लेकर देश-देशान्तर गये।

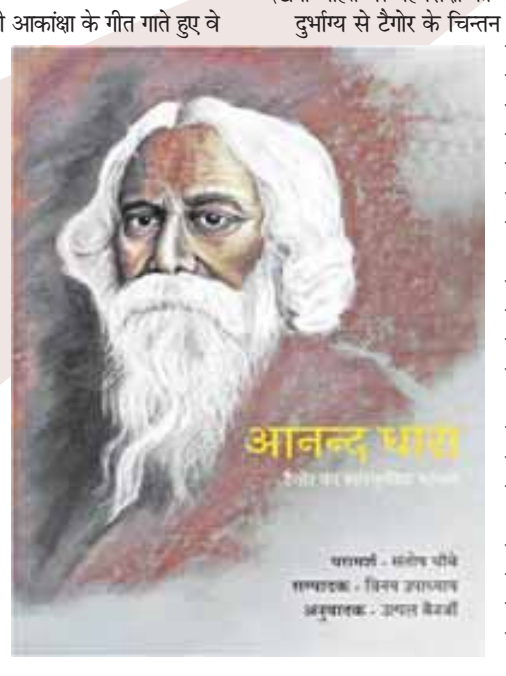

शिक्षा, संस्कृति और संगीत की परस्परता को उदघाटित करते बहुतेरे मूल्यवान आलेख हमें कवि-अनुवादक उत्पल बैनर्जी ने साझा किये हैं। ये आलेख मूल बांगला में टैगोर ने लिखे थे। कुछ आलेख मूर्धन्य बांगला कवि शंख घोष, यामिनी राय, उषा गांगुली, इलाशंकर गुहा, अशोक भौमिक, अम्लान दत्त, सोनाली बोस और विपिन शर्मा के भी हैं। संगीत को जीवन के लिए आवश्यक बताते हुए रबीन्द्रनाथ एक आलेख में कहते हैं कि सहज, नैसर्गिक और अनायास जो जीवन पद्धति हमें परम्परा से मिली है उस मूल्य प्रदाता परम्परा के सिद्धान्तों को हम ठीक से पहचानें। मूल ज्ञान तो मन और आत्मा से जुड़ा है। अज्ञेय द्वारा सम्पादित पुस्तक 'भारतीय कला दृष्टि' में यह उल्लेख है कि कला मनीषी रायकृष्णदास ने जब 1920 में काशी में भारतीय कला भवन की स्थापना की तो रबीन्द्रनाथ टैगोर उनके मुख्य सलाहकार थे। लोकार्पण समारोह में बतौर उप सभापति टैगोर उपस्थित हुए थे। जातीय स्मृतियों के इस संग्रहालय में टैगोर जीवन, प्रकृति और संस्कृति के अंतर्सम्बन्धों को ही देखना चाहते थे। यह शिक्षा का परिसर था।

दुर्भाग्य से टैगोर के चिन्तन और सृजन को भारत ने बहुत सतही देखा-जाना है। खेद है कि खुद टैगोर की सरज़मीं बंगाल ने भी इस कर्मयोगी के कहे-रचे और जिये का न तो ठीक से विस्तार किया और न ही कोई गम्भीर पहल वहाँ सरकार और समुदाय की नज़र आती है। रबीन्द्र संगीत के प्रचार को लेकर कलाकारों ने ज़रूर बहुत ही आसक्त निष्ठा से काम किया है। लेकिन टैगोर के नाटक और उनकी

कहानियों को लेकर बहुत ही सीमित प्रयोग दिखाई देते हैं। इस बात की फ़िक्र इसी कृति में प्रख्यात रंगकर्मी उषा गांगुली और आलोक चटर्जी ने की है। कोई शक नहीं कि टैगोर के नाटकों में गूढ़ दार्शनिकता है। उनकी आध्यात्मिक चेतना के तल को छूना निर्देशक और अभिनेताओं के लिए आसान नहीं। लेकिन बांगला से अन्य ज़ुबानों में उनके सहज भाष्य और रचनात्मक अनुवाद तथा व्याख्या का भी कोई सतत अभियान दिखाई नहीं देता। बस, दो देशों के राष्ट्रगान के रचयिता के बतौर उनका महिमा मण्डन करते रहने में ही संसार कृतज्ञता के अहोभाव से भरा रहा अथवा अंग्रेज़ी में अनुवादित उनकी 'गीतांजली' को नोबल से नवाज़े जाने का यशोगान पीढ़ियों को गर्व से भरता रहा।

चित्रकार-चिन्तक अशोक भौमिक का एक आलेख इस किताब में टैगोर की चित्रकला पर प्रकाशित हैं। भौमिक इस आलेख में इस चिन्ता से भरे दिखाई देते हैं कि रबीन्द्रनाथ के चित्रों को इस देश ने जिज्ञासा से भरकर देखा ही नहीं। वे समकालीन कला चिन्तकों, कला के रहनुमाओं और कलाकारों को भी इस उपेक्षा के लिए आड़े हाथों लेते हैं। शब्दों की दुनिया के कोलाहल से चलकर चित्र जैसी ख़ामोश कला में खो जाने के इस सफ़र पर खुद टैगोर की टिप्पणी कितनी मर्मस्पर्शी हैं- ''जीवन संध्या की प्रेयसी है मेरे लिए चित्रकला। मेरे चित्र, रेखाओं के माध्यम से की गयी मेरी पद्य रचना है''। हालाँकि पेशेवर चित्रकार बनने की चाह कभी भी टैगोर की नहीं रही। न ही पेरिस की किसी प्रदर्शनी में जाना उनका अभीष्ट रहा। उनकी प्रतिभा, संस्कार और संवेदना में जो रहा वह उनके सृजन में चला आया। गांधीजी ने टैगोर की सांस्कृतिक मेधा पर मुग्ध होकर उन्हें 'गुरुदेव' का सम्बोधन दिया और टैगोर ने स्वाधीनता के शिल्पी को 'महात्मा' कहकर पुकारा। दरअसल यह दो विभूतियों के परस्पर आदर और उच्च मानवीय मूल्यों के लिए किये गये समर्पण और स्वीकार का प्रेरणास्पद उदाहरण है। इस समय भारत का नेतृत्व जड़ों से जुड़ने की गुहार कर रहा है। आत्मनिर्भरता और पारम्परिक कौशल के साथ भारत की गुरुता के वर्चस्व का स्वप्न फिर अंगड़ाई ले रहा है। ऐसे में गुरुदेव के गीत की गुँजार दूर तक सुनाई देती है-

जब गान सुनाऊँ अपना
तुम उससे ताल बिठाना
हाथों के कंकन अपने

उस सुर में ज़रा बिठाना
सरिता के छल-छल जल में
ज्यों झर-झर झरती वर्षा
तुम वैसे उन्हें बजाना
बुझ गये दीप बुझने दो
तुम अपना हाथ बढ़ाना

टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र 'विश्वरंग' के मानचित्र में गुरुदेव के कृती-व्यक्तित्व के इन मानस-बिम्बों को अंकित करते हुए धन्यता अनुभव करता है। केन्द्र की ही बहुप्रतिष्ठित-पुरस्कृत पत्रिका 'रंग संवाद' में एक नियमित सिलसिला टैगोर की सांस्कृतिक मेधा को लक्ष्य करते हुए विमर्श के नए आयामों को रचने का रहा है। यही सतत प्रवाहित 'आनन्द धारा' इन पन्नों पर अँजोर लेने की कोशिश रही है।

(टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र)

विश्वरंग गीत

डॉ. राम वल्लभ आचार्य

जिसमें अन्तरमन की उमंग।
भावों अनुभावों की तरंग।
यह विविध कलाओं का प्रसंग।
यह विश्वरंग यह विश्वरंग।।
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग,
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग।।

जिसमें सम्वेदन की सुगंध।
अनुराग राग के ललित बंध।
मुखरित हर भाषा हर बोली।
शब्दों अर्थों की राँगोली।
अनुभूति भूति अक्षय अभंग।।
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग।।

जिसमें प्रबुद्ध वाणी विलास।
अनुपम प्रज्ञाओं का उजास।
सीमा विहीन संवाद सेतु।
हर उपक्रम जग कल्याण हेतु।
साहित्य गगन के शुभ विहंग।।
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग।।
जिसमें अनुगुंजित लोकराग।
संगीत गीत स्वर का सुहाग।
है जहाँ तूलिका का वैभव ।
नित रंगकर्म का नव अनुभव।
नूपुर ध्वनि नर्तित अंग अंग।।
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग।।

कवि रवि प्रेरित अनुपम उत्सव।
संतोष कल्पना का उद्भव।
स्वागत उत्सुक भोपाल नगर।
आतिथ्यातुर है डगर डगर।
सत्कार हेतु हम सभी संग।।
यह विश्वरंग,यह विश्वरंग।।

संपादकीय

वायनाड हादसा : प्रकृति की चेतावनी

केरल के वायनाड जिले में भारी बारिश के बाद हुए विनाशकारी भूस्खलन में अब तक 150 से अधिक लोगों की मौत, 116 लोगों के घायल होने, 220 से ज्यादा लोगों के लापता होने तथा इस हादसे में चार गांवों का तबाह होना महज एक प्राकृतिक आपदा से ज्यादा समूची मानव सभ्यता को चेतावनी है कि वह पर्यावरण को नष्ट करने की अपनी हरकतों से बाज आए। वरना कुदरत अपना रौद्र रूप दिखाने से नहीं चूकेगी। वायनाड में वही हुआ है। जिले भूस्खलन प्रभावित गांवों में सेना व अन्य बचाव दलों ने करीब 1 हजार लोगो को बचाया है। इस दर्दनाक हादसे के बाद केरल सरकार ने राज्य में दो दिन का राजकीय शोक घोषित कर दिया है। राज्य के 12 जिलों के स्कूल-कॉलेजों में दो दिन की छुट्टी घोषित कर दी गई है। साथ ही केरल यूनिवर्सिटी ने 30 और 31 जुलाई को होने वाली सभी परीक्षाएं स्थगित कर दी हैं। इस बीच मौसम विभाग ने क्षेत्र में भारी बारिश जारी रहने की चेतावनी दी है। केरल के वायनाड जिले में यह जानलेवा भूस्खलन सोमवार देर रात मुंडक्कई, चूरलमाला, अट्टामाला और नूलपुझा गांवों में हुआ। इसमें इन गांवों के कई घर, पुल, सड़कें और गाड़ियां बह गईं। वायनाड कांग्रेस नेता राहुल गांधी का निर्वाचन क्षेत्र भी है। हादसे के बाद वो और प्रियंका गांधी वहां जाने वाले थे, लेकिन खराब मौसम के कारण उनका दौरा रद्द कर दिया गया। इसके पहले हादसे की गंभीरता को समझते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन से बात की और उन्हें हर संभव सहायता का भरोसा दिया। साथ ही पीड़ितों को मुआवजे की घोषणा की है। ऐसा नहीं है कि इस इलाके में पहली बार भूस्खलन की घटना हुई है। पांच साल पहले भी यहां भारी भूस्खलन हुआ था। जिसमें 17 लोगों की मौत हुई थी। लेकिन उस घटना से कोई सबक नहीं लिया गया। क्षेत्र में पर्यावरण संतुलन लगातार बिगड़ता जा रहा है। गौरतलब है कि वायनाड जिला केरल के पूर्वोत्तर में है। यह राज्य का एकमात्र पठारी इलाका है। यहां कई ऊंचे नीचे टीले हैं। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की 2021 की रिपोर्ट के मुताबिक, वायनाड की 51 फीसदी जमीन पहाड़ी ढलाने हैं। इस कारण भूस्खलन की संभावना हमेशा बनी रहती है। यहां जनसंख्या घनत्व भी काफी है। ऊंचा पश्चिमी घाट क्षेत्र होने से यहां बारिश भी बहुत होती है। लेकिन हाल के भूस्खलन की घटनाओं के पीछे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण विनाश एक बड़ा कारण है। स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि केरल में कुल भूस्खलन का 59 फीसदी वृक्षारोपण वाले क्षेत्रों में हुआ। इसका बड़ा कारण राज्य में वनो का हो रहा भारी विनाश है। वायनाड में घटते वन क्षेत्र पर 2022 में किए गए एक अध्ययन में बताया गया था कि 1950 और 2018 के बीच वायनाड जिले में 62 फीसदी जंगल गायब हो गए। जबकि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल एंड पब्लिक हेल्थ में प्रकाशित शोध पत्र में बताया गया था कि वायनाड के कुल क्षेत्र के करीब 85 फीसदी हिस्से में 1950 के दशक में वन क्षेत्र था। वैज्ञानिकों के मुताबिक, जलवायु परिवर्तन से पश्चिमी घाट में भूस्खलन की संभावना बढ़ रही है। यह दुनिया के जैव विविधता के आठ सबसे गर्म हॉटस्पॉट है। कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (सीयूएसएटी) के एडवांस्ड सेंटर फॉर एटमॉस्फेरिक रडार रिसर्च के निदेशक एस. अभिलाष ने बताया कि इस क्षेत्र में भारी बारिश की एक बड़ी वजह अरब सागर का गर्म होते जाना भी है। लेकिन बुनियादी सवाल यह है कि क्या वायनाड के इस भीषण हादसे से हम कोई सबक लेंगे या नहीं ?

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गोविंदन गोपालकृष्णन : 'द मॉस्क मैन...'

जनाब मीर तकी 'मीर' के एक चर्चित शेर की पहली पंक्ति है: 'मीर के दिनों- मजहब को क्या पूछते हो?' उर्दू जुबां का आला दर्जे का यह शाइर आगे कश्कां खैंचने और दैर में बैठने की बात करता है, लेकिन हम इस शेर का जिक्र निहायत अलग संदर्भ में कर रहे हैं और यह कतई बेवजह नहीं है। हमारे मुल्क में आज एक ऐसा हुनरमंद शिल्पी है, जो है तो हिन्दु, लेकिन उसने मुस्लिमों की इतनी इबादतगाहों को डिजाइन किया है कि पूछिये मत। यही नहीं, उसने कुरान पर एक बड़ी जिल्द भी तैयार की है। उसकी पत्नी ईसाई है और एक पुत्रवधु इस्लाम की अनुयायी। वह नियम से रोजा रखता है और उपवास भी। वह माथे पर टीका लगाता है। रोजाना प्रभु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है और मानता है कि ईश्वर का घर किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से परे होना चाहिये।

इन बातों से आप समझ गये होंगे कि गोविन्दन गोपालकृष्णन नाम की इस शख्सियत से उसके दीनो-मजहब के बारे में पूछने की क्या तुक है। दरअसल यह शख्स उस ऊंची और सुनहरी पायदान पर खड़ा है, जहां अपने सद्कर्मों से इंसा होना मयस्सकर हो सका है। श्वेत केशी और श्मश्रुमंडित अस्सी पार का यह शख्स केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम में रहता है। उसके अद्वितीय काम के चर्चे दुनिया जहान में हैं। इस्लामी विश्व उसे बखूबी जानता है और उसकी शोहरत समंदर और सरहदों को लांघ चुकी है लेकिन यकीन मानिए कि मुल्क तो दूर, अपने काम में मगन यह शख्स कभी अपने सूबे से बाहर नहीं गया। गाविंदन गोपालकृष्णन केरल में एक से एक सुंदर और आकर्षक मस्जिदों के अभिन्यास और निर्माण के लिए जाने जाते हैं। गिनती करें तो यह संख्या अब 88 तक पहुंच गयी है। कोई ताज्जुब नहीं कि यह संख्या सौ तक पहुंच जाये। शतक और उनके दरम्यां सिर्फ 12 का फासला है। बहरहाल उन्हें केरल में 'मास्क मैन' के तौर पर जाना जाता है। यह सुनहरा तमगा उन्होंने अपने काम से अख्तियार किया है; एक ऐसा काम, जिसकी किसी अन्य से तुलना नहीं की जा सकती और जो अपने आप में एक नजीर है। वह अपने पीछे करीब एक सैकड़ा इमारतों का ऐसा झिलमिल वास्तु- संसार छोड़ जायेंगे, जो न सिर्फ उनकी याद दिलाता रहेगा, वरन ऐसे काबिले फख्र बिरसे के तौर पर याद किया जायेगा, जो इंसानियत और भाईचारे में गहरे यकीन, मानवीय मूल्यों और उदार व सेक्यूलर मनोभावों से उपजा है। गोपालकृष्णन के अलीक- स्थापत्य की एक और खूबी है कि वहां नवाचार को खूब ठौर या स्पेस मिला है।

गोविंदन गोपालकृष्णन प्रतिष्ठित स्थापति हैं, कहें तो कुशल और समादृत वास्तुविद । उनका जीवन रोचक प्रसंगो की लड़ी है। यह अविश्वसनीय, किन्तु सच है कि उनके पास वास्तु की कोई उपाधि नहीं है। वह डिग्रीधारी वास्तुविद नहीं है। वह स्वाध्यायी वास्तु-विद

है। उनके स्थपति की संरचना में अध्ययन, अनुशीलन और अनुभव के रेशे हैं। प्रयोगधर्मिता ने उनके कामों और उनकी शख्सियत को अलग पहचान दी है। घर की माली हालत ऐसी न थी कि वह कालेजझ में दाखिला ले पाते, लिहाजा ठेकेदार पिता के काम में हाथ बंटाने लगे। अभिरुचि के चलते इमारतों का खाका ट्रेस करने लगे। खाका बनाते और फिर जाकर निर्मिति से मिलान करते। इस तरह प्रविधि, सिलुएट, रंग-संयोजन सीखा। स्थापत्य की विभिन्न शैलियों की जानकारी जुटाई। कहते हैं कि जहां चाह, वहां राह। सन 60 के दशक की बात है। उनकी दोस्ती एक एंग्लो इंडियन एलए सल्डाना से हो गयी। सल्डाना ड्राफ्ट्समैन थे। गोपाल ने उनसे ड्राइंग और स्केचिंग के विधिवत गुर सीखे। उन्हें यह आभास होते देर न लगी कि वास्तु ही उनकी नियति है। इसी के चलते वह पलयम स्थित मस्जिद के पुनर्निर्माण में पिता का हाथ बंटाने को प्रवृत्त हुए। इस बीच कुछ अर्सा उन्होंने सरकारी पीडब्लूडी महकमे में बतौर अवैतनिक अप्रेंटिस भी गुजारा। बहरहाल, मस्जिद बनकर तैयार हुई। गाविंदन के अनुसार यह दैवीय विधान था। इबादतगाह इस्लाम के अनुयाइयों की। उसे बनाया अपने ईसाई मित्र के सहयोग से, एक हिन्दू धर्मावलंबी ने। इमारत में मीनारे थीं और गुंबद भी, लेकिन उसके अभिराम स्थापत्य में मंदिर और गिरजे के स्थापत्य का सुमेल था। इस मस्जिद का उद्घाटन सन् 1964 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने किया।

वह दिन और आज का दिन। पूरी अर्द्धशती नहीं, साठ साल गुजर गये। गोविंदन ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। खूब काम मिला। मंदिर, चर्च, घर, शॉपिंग मॉल, वाणिज्यिक और सामुदायिक केन्द्र। उनके काम को सराहा गया और उन्हें अवाम की ओर से तमगा मिला 'मॉस्क मैन' का। राजधानी में बीमापल्ली में जुम्मा माजिद ने उन्हें नायाब शोहरत बख्शी। इसे तामीर होने में 18 साल लगे। वित्तीय अवरोध का समाधान आम लोगों के चंदे से हुआ। उस मस्जिद में भी पारंपरिक स्थापत्य से विचलन देखने को मिला। इसकी सज्जा में उन्होंने कमल का उपयोग किया। कट्टरपंथियों ने नुक्ताची की। गोविंदन ने कहा कि कमल किसी धर्म या संप्रदाय की अमानत या बपौती नहीं है। वह एक सुंदर पुष्प है। भारत का राष्ट्रीय पुष्प। गोविंदन के तर्क ने सबको निरुत्तर कर दिया। गोविंदन किसी भी शैली में जड़ नहीं हुये। करुणागापल्ली की शेख मस्जिद में मुगलकालीन प्रेम के अतुल्य स्मारक ताजमहल का अक्स नजर आता है, तो कोल्लम के नजदीक जियारामुथुडु मस्जिद में इंडो-सार्सेनिक स्थापत्य की छटा। ऐसे ही त्रिवेंद्रम की चलाई मास्क में समकालीन आधुनिक विन्यास के दर्शन होते हैं। ऐसा लगता है कि उदारमना गाविंदन स्थापत्य की विभिन्न शैलियों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे हैं। उनके विन्यास में सौन्दर्य-बोध अनिवार्य पक्ष है। वह रंगों का चयन भी इसी दृष्टिकोण से करते है। वावारपल्ली की नैनार मस्जिद गोविंदन की सूझबूझ के लिए जानी जाती है। समस्या थी कि ऐसा क्या किया जाये कि न तो नमाजियों को दिक्कत हो और न ही भगवान अय्यप्पा के भक्तों को असुविधा। गोविंदन ने आवाजाही के लिये बारामदा बनाया और उसे छत से ढंक दिया।

85 वर्षीय गोविंदन तिरुअनंतपुरम में तीन मंजिला आवास में सपरिवार रहते हैं। उनकी दिनचर्या भोर में छह बजे अखबार पढ़ने से शुरू हो जाती है। साढ़े आठ बजे तक वह तैयार होकर दफ्तर में बैठ जाते हैं। उनके घर में गीता भी है, कुरान भी और बाइबल भी। रमादान में वह रोजा रखते है, ईस्टर पर फास्ट और सबरीमलै- उत्सव में 41 दिन का उपवास। उनका नीति-वाक्य है हर धर्म का समान आदर। उनकी पत्नी ईसाई है। दो बेटे हैं और एक बेटे की पत्नी मुस्लिम है। विविध धर्मग्रंथों से उन्होंने ज्ञान अर्जित किया है। कुरान का मलयाली में अनुवाद के अलावा उन्होंने कुरआन की करीब 1200 पेजों की टीका भी लिखी है। उन्हें गीता, बाइबिल और कुरआन में पर्याप्त साम्य दिखा। उनकी टीका छह साल की मुसलसल मेहनत का नतीजा है। स्थापत्य के सीखने-समझने में पर्सी ब्राउन की किताबों ने उनकी बड़ी मदद की। उन्होंने अपनी अवधारणा के अनुरूप मानव मैत्री की स्थापना की। उनका मन धार्मिक विचारों की पाठशाला खोलने का भी है। जाहिर है कि यह अवधारणा इन्हें गांधी - मार्ग पर ले जाती है। यूं भी जीवन और जगत उनकी पाठशाला रहा है। वह रोजाना ईश्वर का शुक्राना अदा करते हैं। ऐसे शख्स के दीनो मजहब को क्या नाम दिया जाये? आस्था, प्रार्थना और नेकी की दुनिया किसी भी नाम से बड़ी है। वह नवाचारी रचयिता हैं और यही सन्दर्भ संश्लिष्ट और उजले रेशों की इस शख्सियत को अलग सोपान पर खड़ा कर देते हैं।

विश्व स्तनपान सप्ताह पर विशेष

सुनील कुमार गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

इस धरा के हर बच्चे को मां का दूध मिलना ही चाहिए

'स्तन के दूध को दूध नहीं, जीवन का सत्व कहूंगी
सार कहूंगी, तत्व कहूंगी, जीवन की बुनियाद कहूंगी।'

किसी डॉक्टर कवि की यह पंक्तियां उन तमाम महिलाओं के जीवन का आधार बन रहीं हैं, जिन्होंने भय, भ्रम, परंपराओं और रूढ़ियों की फांसों से मुक्त होकर अपने नवजात शिशु को पहले घंटे के भीतर स्तनपान कराया, अपना पहला गाढ़ा- पीला दूध पिलाया। राजधानी भोपाल के एक अस्पताल में बेटी को जन्म देने वाली पूजा दिवाकर हो या आष्टा की सुमन अथवा खंडवा जिले के आदिवासी बाहुल्य इलाके खालवा और पंधाना ब्लॉक की किरण और आशा। यह सभी तो जागरूकता और परिवार का साथ मिलने से कामयाब रहीं, लेकिन रायसेन जिले के एक छोटे से गांव बरखेड़ा की 80 फीसदी महिलाएं पूजा या सुमन की तरह खुशनसीब नहीं रहीं। वह बच्चे के जन्म के बाद उसे स्तनपान नहीं करा पाईं। परिवार के बड़े-बुजुर्गों ने इन मांओं को अपने पारंपरिक ज्ञान के बोझ तले दबा दिया, किसी बच्चे को शहद चटाया, किसी को गुड़ का पानी पिलाया। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी भी इसकी बड़ी वजह बनीं।

विभाग ने अपने अभियान का स्लोगन दिया है 'सफल स्तनपान-मां की ही नहीं, पिता की भी जिम्मेदारी', 'सबका मिले समर्थन और सहयोग'।

स्तनपान सप्ताह क्यों?

स्तनपान को लेकर सफलता और असफलता की ये दो तस्वीरें बताती हैं कि बदलाव तो हो रहा है, लेकिन बदलावों की रफ्तार 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' वाली कहावत जैसी है। यह स्थिति भारत ही नहीं दुनिया के अनेक देशों की है। इसी अंतर को पाटने के उद्देश्य से सन् 1992 में विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनिसेफ की साझा पहल पर पूरी दुनिया में विश्व स्तनपान सप्ताह मनाने की घोषणा की गई थी। हर साल के अभियान की एक नई थीम घोषित की जाती है। इस साल 'अंतर को कम करना और सभी के लिए स्तनपान में सहयोग' थीम रखी गई। भारत में हर साल 1 अगस्त से 7 अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया जाता है। मप्र महिला एवं बाल विकास

पहला दूध जैसे पहला टीका, नियमित स्तनपान जरूरी

भोपाल के जेपी अस्पताल में वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. श्रद्धा अग्रवाल ने मां के पहले गाढ़े दूध और स्तनपान के महत्व को लेकर बताया कि आपने कहावतों में, आपस में बातचीत में 'तूने मां का दूध पिया है' या 'छठी का दूध याद दिला दूंगा' जैसे शब्द खूब कहे-सुने होंगे। दरअसल यह शब्द बताते हैं कि मां का दूध कितना ताकतवर होता है। स्तनपान एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य और विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। मां का शिशु को जन्म के पहले घंटे में पहला गाढ़ा दूध (कोलोस्ट्रम) पिलाना बहुत जरूरी और फायदेमंद होता है। यह दूध कैलोरी, विटामिन्स से भरपूर और रोग प्रतिरोधक शक्ति से परिपूर्ण होता है। इम्युनिटी बढ़ाने वाले इस दूध को इसीलिए बच्चे के लिए पहला टीका भी कहा जाता है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में कोलोस्ट्रम को अशुद्ध माना जाता है और इसे फिंकवा दिया जाता है, जबकि यह गलत धारणा है।

शुरूआत में इसकी मात्रा बहुत कम होती है, लेकिन शिशु की भूख मिटाने के लिए बहुत पर्याप्त होती है। शिशु के स्तनपान से मां के मस्तिष्क से ऑक्सीटोसिन हार्मोन्स का रिसाव होता है, जिससे मां के दूध में वृद्धि होती जाती है।

डॉ. श्रद्धा अग्रवाल आगे बताती हैं कि पहले शिशु को जन्म के बाद अलग ट्रे में लिटा दिया जाता था, लेकिन नए शोध सामने आने के बाद अब सीधे पेट पर लिटाया जाता है, यह प्रकृति का वरदान है कि बच्चा अपने आप स्तनों की ओर घूम जाता है। स्तनपान कराने से बच्चे और मां के शरीर का तापमान भी संतुलित रहता है, स्तनपान से मां के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होता है और जन्म के बाद हुए घाव जल्दी भरते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चे को अलग से पानी नहीं पिलाना चाहिए। क्योंकि मां के दूध में ही पर्याप्त पानी होता है। बच्चे को जन्म के बाद 6 माह तक केवल स्तनपान कराना चाहिए। इससे बच्चा ही सेहतमंद नहीं रहता, बल्कि मां के शरीर से भी अतिरिक्त चर्बी अपने आप कम हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी बच्चों को जन्म के पहले 6 महीने तक केवल मां का दूध पिलाने की सिफारिश करता है और 6 महीने के बाद पूरक आहार के साथ 2 साल तक बच्चे को स्तनपान कराने की सलाह देता है।

देश और मप्र की तस्वीर हकीकत के आईने में

बीते तीन दशकों के दौरान तमाम अभियानों और सरकारी-गैर सरकारी कोशिशों के बावजूद आपको यह जानकर हैरानी होगी कि भारत में शिशुओं को स्तनपान की दर अभी भी बहुत कम है। आज भी भारत में हर दूसरा बच्चा मां के पहले दूध से वंचित रहता है। हर चौथे-पांचवे बच्चे को 6 महीने तक मां का दूध नहीं मिल पाता। उसे फार्मूला मिल्क, गाय के दूध, टोण्ड मिल्क जैसे अन्य विकल्पों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह हम नहीं कहते, बल्कि राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे (3-5) के आंकड़े बयां कर रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 2005 में जहां पहले घंटे में मां का दूध (कोलोस्ट्रम) पिलाने की दर 23.1 फीसदी थी, जो 2015 में बढ़कर 41.5 फीसदी हो गई। मप्र में अब जाकर शिशुओं को पहले स्तनपान की दर शहरी इलाकों में 41.3 फीसदी और ग्रामीण क्षेत्रों में 42.8 फीसदी हो पाई है। सबसे बेहतर स्थिति मप्र के शिवपुरी जिले की है, जहां 64 प्रतिशत बच्चों को पहले घंटे में मां का दूध मिल जाता है। इसके बाद सिवनी में 59.3, आगर-मालवा में 59.1, खंडवा में 57.9, मुरैना में 57.2 का नंबर आता है। सबसे बुरी स्थिति मप्र के सतना जिले की है, यहां 17.7 प्रतिशत, अनूपपुर में 21.5 प्रतिशत और छतरपुर में 22.5 प्रतिशत बच्चों को पहले घंटे में मां का दूध मिल पाता है।

संस्थागत प्रसव 90 फीसदी, लेकिन स्तनपान 42 फीसदी क्यों?

मप्र महिला बाल विकास विभाग के संयुक्त संचालक डॉ. सुरेश तोमर कहते हैं कि निजी और सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य संसाधनों के बढ़ने और जागरूकता अभियान के असर से संस्थागत प्रसव तो बढ़कर 90 प्रतिशत से ज्यादा होने लगे हैं, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि संस्थागत प्रसव बढ़ने के बावजूद शिशुओं को स्तनपान कराए जाने का प्रतिशत नहीं बढ़ा है। वह स्वीकार करते हैं कि कहीं न कहीं हमारे प्रयासों में कमी है। साझा प्रयासों को और तेज करने की जरूरत है। तोमर कहते है कि स्तनपान शिशु के स्वास्थ्य और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसके बावजूद कई परंपराएं और रूढ़ियां ऐसी हैं, जो स्तनपान के सही तरीके अपनाने में बाधा डालती है। सदियों की पारंपरिक मान्यताओं, धारणाओं, मिथकों, रूढ़ियों के आधार पर किए जा रहे सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन बड़ी चुनौती है। इसके लिए विभाग पूरे प्रदेश में बड़े पैमाने पर प्रशिक्षक तैयार करने जा रहा है।

अभिव्यक्ति

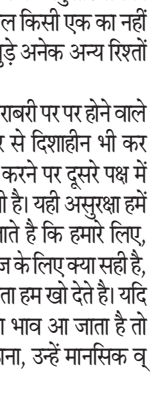

अदिति सिंह भदौरिया

लेखिका स्तंभकार हैं।

ग्रे डिवोर्स ज्वलंत प्रश्न

विवाह समाज के लिए सभी लोगों के लिए आधारभूत सबंध है। जिसमें ना केवल दो लोग जुड़ते है बल्कि दो परिवार अपनेपन की डोर से बंध जाते है। विवाह हमारे समाज की एक बहुत सुन्दर प्रथा है। लेकिन इस प्रथा में तलाक शब्द के आ जाने से विवाह पर से लोगों का विश्वास खत्म होता जा रहा है। डिवोर्स या आजकल के प्रचलन मना आया ग्रे डिवोर्स हमारे समाज पर एक प्रश्नचिह्न की तरह है।

हमें यह भी सोचने पर विवश करता है कि आधी उम्र साथ में बिताने के बाद भी यदि एक जोड़ा अलग होना चाहता है तो यह हम सब के लिए दुखदायी है, क्योंकि सिर्फ औरत के लिए ही नहीं एक पुरुष के लिए भी अपने विवाह को तोड़ना आसान नहीं होता। उम्र के उस दौर में जब हमें साथी की सबसे अधिक जरूरत लगती है जब तब हम अकेलेपन को चुनते है तो सोचिए की जीवन में कितनी कड़ी परीक्षाओं से वह रिश्ता निकला होगा। एक समय में आकर किसी भी दम्पति का उस रिश्ते में रहने के कारण उनके बच्चे होते है, पर वह खुद क्यों नहीं हो पाते? क्यों एक रिश्ते को बचाए रखने का कारण प्रेम नहीं हो सकता। यदि प्रेम के अतिरिक्त कोई दूसरा कारण हम बनाते है तो विश्वास कीजिए वह कारण ज्यादा देर तक उस रिश्ते को बचा नहीं सकता। ग्रे डाइवोर्स इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। एक उम्र साथ में बीताने के बाद भी हम रिश्ते को बचाने में कामयाब नहीं हो पाते तो किसी एक व्यक्ति या कारण को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। बदलते समय के अनुसार सबको बदलना चाहिए लेकिन यहाँ सवाल किसी एक का नहीं बल्कि उस एक रिश्ते के साथ जुड़े अनेक अन्य रिश्तों पर भी सवाल उठता है।

समाज में स्त्री -पुरुष की बराबरी पर पर होने वाले विवादों ने समाज को कई प्रकार से दिशाहीन भी कर दिया है।किसी एक पक्ष की बात करने पर दूसरे पक्ष में असुरक्षा की भावना पनपने लगती है। यही असुरक्षा हमें स्वार्थी बना देती है। हम भूल जाते है कि हमारे लिए, हमारे परिवार के लिए, हमारे समाज के लिए क्या सही है, क्या गलत है यह समझने की क्षमता हम खो देते है। यदि पुरुष में असुरक्षा एवमं अहम का भाव आ जाता है तो अपनी पत्नी या बेटी पर हाथ उठाना, उन्हें मानसिक व् शारीरिक कष्ट देना आम जाता है।

कई रिश्तों में देखा गया है कि पति अपनी पत्नी पर हाथ नहीह उठाता लेकिन कहीं पर भी उससे अभद्रता से बात करना या उसे नीचा दिखाना उसके लिए आम बात है। धीरे-धीरे यही बातें किसी भी रिश्ते को टूटने पर मजबूर कर देती है।हम यह कब समझेंगे कि पैसों से अधिक सम्मान ही है जो किसी भी रिश्ते को बचाने और उसे हमेशा अपना बनाए रखने में सहायक होता है। औरत किसी भी परिस्थिति में अपने पति का साथ देती है बशर्ते वह उसे समाज के सामने नीचा ना दिखाए। जब आप बार-बार अपनी कुंठाओं को शब्दों का रूप देकर सामने वाले पर प्रहार करते है तब आप उस हर रिश्ते को अपने से दूर करते है जो आपके लिए कुछ भी कर सकता है। लेकिन कुछ भी कर जाने में आत्मसम्मान को छोड़ दें यही बस नहीं हो पाटा और वह रिश्ता खत्म हो जाता है।एक उम्र तक साथ रहने के बाद जब कोई रिश्ता खत्म होता है तब यह तमाचा है उस समाज पर कि हम क्या कर रहे है? किस सामाजिक ढाँचे की दुहाई देते है जब नीवं तो खोखली ही बन रही है।

टूटते रिश्ते की चोट मात्र पति या पत्नी को ही नहीं लगती बल्कि उनके बच्चे जिस मानसिक तनाव से गुजरते है उसका तो शब्दों में अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। हां समाज हर बार की उन बच्चों की स्थिति समझे बिना सलाह ज़रूर देता है , अरे, झगड़ा तो तुम्हारे माता-पिता में था, तुम तोपढ़ सकते थे या तुम तो सकारात्मक रास्ता चुन सकते थे। लांछन लगाना बहुत आसान है पर एक नकारात्मक परिवेश से निकलना बहुत दर्दनाक है। हमें यह भी समझना पड़ेगा कि हर पल के अपमान और नकारात्मकता के बावजूद यदि वह बच्चे आत्महत्या का रास्ता नहीं चुनते तो यह समझे कि उनसे अधिक सकारात्मक और कोई नहीं है।

अलग रास्ता चुनने के बाद आजकल के फैशन की तरह तलाक को पार्टी मनाकर एन्जॉय मत कीजिए, क्योंकि आप एक रिश्ते से अलग हो रहे है ना कि आगामी हर रिश्ते को भी अपने उपर भरोसा करने से रोक रहे है। इसका यह बिल्कुल मतलब नहीं है की रोते रहें, हँसीं को चुने पर अपना या अपने बीते किसी भी रिश्ते को हँसी का पात्र बनाकर प्रस्तुत ना करें। जीवन एक ही बार मिलता है, इसी भरपूर जीएं, पर दूसरों के सामने मिसाल बनकर ना की एक पात्र किस्सा बनकर।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

पूरन सरमा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मैया मोहे कुर्सी लागे प्यारी!

पच्चीस वर्ष का गबरु नौजवान परसादी लाल विधायक का चुनाव जीतकर अपनी माता के, श्री चरणों में गिरकर बोला- 'मैया मोहे कुर्सी लागै प्यारी।'

माता बोली- 'उठो बेटा, कुर्सी तुम्हारे लिए बाल्यकाल से प्यारी लगती है। जब तुम छोटे थे तो तुम्हारे बाबा तुम्हारे लिए एक कुर्सी लाये थे, जिसको तुम छोड़ हीं नहीं पाते थे और हमेशा उस पर बैठे रहते थे। स्कूल में तुम्हारा पढ़ने में मन नहीं लगता था तथा सदैव नेतागिरी में लगे रहना तुम्हारा शगल था। आज तुमने उसी शगल को व्यवसाय में बदल दिया है। मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि तुम विधायक बन गये।'

परसादी लाल उठ खड़ा हुआ और बोला- 'माते, पढ़-लिखकर मैं क्या करता। बेकारी की लम्बी लाइन में जा लगता और तुम्हारे लिए सिरदर्द बन जाता। मैंने दल-दल को नहीं पाला। मैंने निर्दलीय जीत हांसिल की है। माते, आजकल गठबंधन सरकारें बनती हैं और उन्हें बहुमत के लिए विधायकों की दरकार रहती है। चिंता मत करो मेरा यह कुर्सी मोह ही मुझे जल्दी ही मंत्री पद भी दिलवायेगा। माता! हारने वाले दल के प्रत्याशियों की बहुत दुर्गति होती है। वे पांच वर्ष एक खूंटे के बंधे अपने कर्मों को कोसते हैं। माता मुझे आशीर्वाद दीजिये।'

परसादी लाल की माता ने उसे गले से लगा लिया और बोली- 'जाओ मंत्री बनो।' परसादी की बांछें खिल गईं। वह बोला- 'माते, चुनाव में अधिकतम सीटें प्राप्त करने वाले दल के पास सरकार बनाने जितने विधायक नहीं है और उसकी तरफसे मुझे ऑफर मिल रहे हैं। अभी बारगेनिंग चल रही है। भगवान ने चाहा तो मुझे चुनाव में खर्च किया हुआ धन और मंत्री पद दोनों मिल जायेंगे। मैया मैं मंत्री की कुर्सी पर बैठने को लालायित हूँ और मैं इसके लिए पिताजी के तमाम उसूलों को ताक में धर दूंगा। माता आप प्रेक्टिकल हैं। सारा गणित जानती हैं। अब मुझे तनिक यह भी बताओ कि मैं मंत्री बनकर क्या करुं और क्या नहीं?'

'बेटा परसादी सबसे बढ़िया बात जो तेरे पक्ष में जा रही है, वह है तेरा बिना पढ़ा-लिखा होना। अब तू रिश्वत-कमीशन खा, निधड़क होकर घोटाले कर, ठेका-मारपीट दिला यानि पैसा अकूत इकट्ठा करने के लिए कुछ भी करेगा तो मैं अपने को धन्य मानूंगी। जा और सरकार बनाने में भीतर से समर्थन दे। बाहर से समर्थन देने वाले बेवकूफ होते हैं। जब तक तुझे तेरी प्यारी कुर्सी न मिल जाये, तब तक तू समर्थन देने की 'हॉ' भी मत करना।' परसादी की माता ने कहा।

परसादी गदगद हो गया। वह दिन में ही रंगीन सपने देखने लगा। उसे पता था कि उसके सपनों के पंख लगने में अब ज्यादा समय नहीं हैं। होनकार परसादी लाल ने एक बार अपनी जननी के पांव छुये और जोड़-तोड़ के लिए अपने पूस के घर से निकल पड़ा। जाते हुये उसने अपने घर को देखा और संकल्प लिया कि उसने इसे कोठी में नहीं बदल दिया तो उसका नाम परसादी लाल नहीं। कुर्सी मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे पाकर रहूंगा। अंत में परसादी लाल नयी सरकार में स्वायत्त शासन मंत्री बन गया।

सोहागपुर विधानसभा में तीसरी बार किसान सड़कों पर

राजनैतिक विद्वैशता के कारण सोहागपुर ब्लाक के किसानों की मूंग तुलाई नहीं हो पा रही,भारी पुलिस बल तैनात

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र में किसान अपनी फसल की तुलाई नहीं होने के कारण तीसरी बार किसानों को सड़क पर उतरना पड़ रहा है। आज जयंती वेयरहाउस सेमरीहरचंद के समीप चक्का जाम किया गया। लेकिन आज आन्दोलन कर रहे किसानों ने एक रास्ता देकर वाहनों को जाने दिया। लेकिन पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग पर करीबन साढ़े तीन घंटे तक सैकड़ों किसान पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पार्षद के साथ सड़क पर जमें रहे। इधर पुलिस ने भी माकूल व्यवस्था की थी। एसडीओ पुलिस संजू चौहान,नगर निरीक्षक कंचनसिंह के अलावा पुलिस बल भी उपस्थित था।

आरोप किसानों का – सोहागपुर के समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद में माखननगर के अंतर्गत जयंती वेयरहाउस के आस-पास आक्रोशित किसानों ने बताया कि यह कैसी किसानों की सरकार है जो कहती है वह करती नहीं। हम किसानों के 140 स्लाट बुकिंग थीं। लेकिन 26 किसानों की मूंग तुलाई के बाद वहां खरीदी कर रही महुआखेड़ा समिति ने हम किसानों की फसल के तोलने से इन्कार कर दिया।

140 स्लाट की दिनांक 24,25 एवं 26 तारीख में तुलाई होना थी। लेकिन यह कह कर तुलाई नहीं की गई कि ऊपर निर्देश आया है। हम यहां की दिनों से अपनी तारीख का इन्तजार कर रहे थे। यह फरमान

सुना दिया गया।

समीप ही मूंग से भरे खड़े थे ट्रेक्टर– जैसे ही यह फरमान किसानों को मालूम हुआ।तब देखते देखते सैकड़ों किसानों ने पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग रोक लिया। हालांकि एसडीओ पुलिस संजू चौहान एवं नगर निरीक्षक कंचनसिंह ने आन्दोलन समझाईस दी।कि अन्य स्थान पर आन्दोलन करें। रास्ते पर न बैठें। इस पर आन्दोलन कारियों को समर्थन दे रहे जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पटैल ने कहा कि शासन भी हमारी बातें यही बैठने पर सुनता है।

आरोप लगाया – जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पटैल ने आरोप लगाया है कि सत्ता से जुड़े व्यापारियों ने पूरे साल किसानों से मूंग खरीदी की है।उन सत्ता से जुड़े बिचौलिए की मूंग तुलाई हो गई।अब वास्तविक किसान परेशान हैं। आपने यह भी कहा कि नोट बंदी के समय भी क्या कोई बड़ा आदमी लाइन में खड़ा था। श्री पटैल ने कहा कि मंगलवार को हम इस मामले में जिला नर्मदापुरम में संबंधित अधिकारियों से गुजारिश की थी कि जिन किसानों के स्लाटर बुक हैं।उनकी तुलाई हो। इसके साथ जो किसान स्लाट खुलने का इन्तजार कर रहे हैं।उनको भी राहत दी जाए।उन्होंने इशारों-इशारों में कहा यह सब साहब का काम है।जो सोहागपुर क्षेत्र के वाशिंदों, किसानों चुकानी पड़ रही है। इससे क्या वोट-बैंक बढ़ेगा?

मुख्यमंत्री मोहन यादव की वाल से – मुख्यमंत्री मोहन यादव ने अपने 31 जुलाई दोपहर 3 बजकर 53 मिनट पर लिखा है। कि प्रदेश सरकार के लिए किसान हित सर्वोपरि है।प्रदेश के किसान भाइयों की मांग को ध्यान में रखते हुए तिथि में संशोधन किया है। ग्रीष्मकालीन मूंग के लिए उपार्जन की तिथि 31 जुलाई तक निर्धारित थी। लेकिन किसानों के हित में निर्णय लिया है ।कि अब उपार्जन संबंधी समस्त जिलों में एक दिन आप किसानों को स्लाट बुकिंग करने के लिए दिया जा रहा है, जिससे 5 अगस्त तक मूंग का विक्रय किया जा सकेगा।संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है। कि समय सीमा को ध्यान में रखते हुए यह भी ध्यान देना है कि वर्षाकाल होने से किसानों को कोई असुविधा न हो।

ब्रह्माकुमारीज में एक पेड़ मां के नाम वृक्षारोपण अभियान का आयोजन

बैतूल नपाध्यक्ष ने ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ किया वृक्षारोपण

बैतूल। ब्रह्माकुमारीज के खंजनपुर बैतूल स्थित 'आनंद सरोवर' उद्यान में आज सोमवार शाम 4 बजे बैतूल नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर ने 'एक पेड़ मां के नाम' वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण किया तथा ब्रह्माकुमारीज बैतूल में इस अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज बैतूल की क्षेत्रीय निर्देशिका बीके मंजू बहन, सारनी क्षेत्र निर्देशिका बी के सुनीता बहन, बी के सविता बहन, बीके श्रद्धा बहन, बी के निशा, नंदकिशोर भाई मुख्य रूप से उपस्थित थे। सभी ने अपने मां के नाम से एक एक पौधा लगाया और भविष्य में इसको संरक्षित रखने का संकल्प लिया। इससे पहले भी ब्रह्माकुमारी द्वारा कल्पतरु अभियान निकाला गया था जिसमें लाखों की संख्या में विश्व स्तर पर वृक्षारोपण किया गया और यह अभियान अभी भी कार्यरत है। विदित हो कि भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा भी इस अभियान का शुभारंभ अपने परिसर में वृक्षारोपण कर किया गया।

आर.आई. पद से स्वैक्षिक सेवानिवृत्ति होने पर आज सरस्वती स्कूल में पौधारोपण का आयोजन

बैतूल। बैतूल जिले के विभिन्न राजस्व डिवीजन में रेवेन्यू इंस्पेक्टर की दमदारी से नौकरी करने वाले महर्षि शिक्षा समिति के कोषाध्यक्ष और समाजसेवी हरीश गढ़ेकर ने अपने राजस्व निरीक्षक पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले लिया है । और इसके उपलक्ष्य में आज गड़ाघाट रोड स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया है। यह कार्यक्रम सुबह 10 बजे संपन्न होगा।

श्री गढ़ेकर ने बताया कि वे लंबे समय से स्वैच्छिक सेवा निर्मित के आवेदन लगाए हुए थे, लेकिन अब शासन ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। इसके उपलक्ष्य में 31 जुलाई को जिला अस्पताल में दुर-दराज से आने वाले मरीज और उनके परिजनों को उनकी ओर से निशुल्क भोजन कराया गया है। इसी तारतम्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अति महत्वाकांक्षी योजना एक पेड़ मां के नाम को सार्थकता प्रदान करने के लिए अपने समिति के सदस्यों के साथ गढ़ाघाट रोड में स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में आज सुबह 10 बजे पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया है, जिसमें काफी संख्या में लोग शामिल होने की संभावना है। अपने समस्त साथियों, शुभचिंतकों और परिजनों से उन्होंने आग्रह किया है कि आप सभी प्रकृति के संरक्षण के लिए आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में जरूर शामिल हो।

द हिमालय एकेडमी में बच्चों ने मनाया ग्रीन डे

देवास। द हिमालय एकेडमी, में 31 जुलाई बुधवार को कक्षा नर्सरी से 2 री तक के विद्यार्थियों को पर्यावरण से जोड़ने के लिये ग्रीन डे सेलिब्रेशन किया गया। विद्यार्थियों ने ग्रीन डे पर कविता, गीत एवं नाट्य प्रदर्शन द्वारा प्रकृति, पर्यावरण एवं पौधों को बचाने का संदेश दिया। विद्यार्थियों ने मोर, नदी, पेड़, बादल, फल, सब्जियाँ आदि बनकर प्रस्तुतियाँ दी। सभी विद्यार्थी ग्रीन ड्रेस में उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाया गया। अधिकांश विद्यार्थी ग्रीन बेग, ग्रीन टिफीन, ग्रीन बॉटल, ग्रीन वेजीटेबल एवं ग्रीन फ्रूट्स लेकर आये तथा विद्यालय का स्टॉफ भी ग्रीन ड्रेस में उपस्थित हुआ। विद्यार्थियों द्वारा पौधों एवं वनस्पतियों पर कविताएँ एवं गीत प्रस्तुत किये गए। अंत में विद्यार्थियों को ग्रीन स्वीट्स एवं ग्रीन फ्रूट्स वितरित किये गए।

दिव्यांग छात्रावास के बच्चों ने मां चामुंडा टेकरी पर सीडबॉल का किया रोपण

देवास। मां चामुंडा की टेकरी को और अधिक हरा-भरा करने के लिए प्रशासन एवं समाजसेवी संस्थाओं के साथ-साथ दिव्यांग छात्रावास के बच्चों ने भी सीडबॉल का रोपण किया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डीपीसी कार्यालय की सहायक परियोजना समन्वयक रेनू गुप्ता थी। श्रीमती गुप्ता ने कहा कि सीडबॉल के बीज बिखेरने, रोपण करने से भविष्य में यह बीज पौधे से पेड़ बनेंगे जिससे मां चामुंडा की टेकरी और हरीभरी, साथ ही टेकरी का क्षरण भी रुकेगा। बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए आयोजन किया गया था। वातावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए आज पेड़ पौधों के सख्त आवश्यकता है, क्योंकि पेड़ पौधे ही हमें शुद्ध ऑक्सीजन दे सकते हैं। जिस तरह से आज पेड़ों का कत्लेआम किया जा रहा है, वह चिंताजनक है। अधिक से अधिक लोग पौधे लगाकर पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए कृत संकल्पित हो। छात्रावास अधीक्षक सुरेंद्र सिंह खींची ने बताया कि छात्रावास के 50 बच्चों ने इस पर्यावरण के कार्यक्रम में भाग लिया। सभी बच्चों ने माता जी की टेकरी के दर्शन किए एवं सभी को स्वल्पाहार करवाया गया। यह जानकारी शासकीय माध्यमिक विद्यालय महाकाल कॉलोनी के प्रधान अध्यापक महेश सोनी ने दी।

बैतूल-आशापुर स्टेट हाईवे पर पलटा ट्रक, दोपहर तक ठप रहा यातायात

बैतूल। भीषण हादसों के लिए कुख्यात बैतूल-आशापुर स्टेट हाईवे के लेड़दा घाट पर बीती रात एक और हादसा हो गया। यहां एक लोहे से भरा ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। वहीं एक दूसरा ट्रक खाई के किनारे पहुंच कर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे के चलते स्टेट हाईवे पर रात से लेकर मंगलवार रात से बुधवार 2.30 बजे तक यातायात ठप रहा। प्राप्त जानकारी के अनुसार बीती रात यहां पर लोहा लेकर जा रहा एक ट्रक पलट गया। वहीं दूसरा ट्रक ब्रेक नहीं लगने के कारण खाई में घुस गया तिरछा हो गया। इसके चलते यहां से रात से ही बड़े वाहनों की आवाजाही नहीं हो पा रही थी। यहां से केवल कार जैसे छोटे वाहन ही निकल पा रहे थे। दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लगी थी। सूचना मिलने पर भीमपुर पुलिस चौकी से पुलिस स्टाफ मौके पर पहुंच गया था। आज सुबह क्रेन बुलवाकर ट्रकों को एक ओर हटाने की मशक्कत शुरू की गई। भीमपुर चौकी प्रभारी बलराम यादव ने बताया कि तिरछे फंसे ट्रक को निकाल दिया गया है। इसके बाद दोपहर 2.30 बजे से यातायात शुरू कर दिया गया है। वाहन चालकों द्वारा सावधानी से वाहनों को निकाला जा रहा है। उल्लेखनीय है कि लेड़दा घाट पर अंधे मोड़ और अत्यधिक ढलान के कारण आए दिन हादसे होते रहते हैं। इसका सुधार करने के लिए कई बार आंदोलन हो चुके हैं और ज्ञापन सौंपे जा चुके हैं। इन सबके बावजूद यहां हालत जस की तस है। अभी भी आए दिन यहां पर हादसे होते रहते हैं। दो साल पहले यहां अंधे मोड़ और ढलान वाले क्षेत्र में कटाव और भराव कार्य करके हादसों का खतरा कम करने डेढ़ करोड़ की लागत की योजना बनी थी।

डेंगू के चार मरीज मिलने से स्वास्थ्य महकमे में मचा हड़कंप

बैतूल। लंबे समय बाद जिले में डेंगू के चार मरीज मिलने से स्वास्थ्य महकमे में हड़कंप मच गया। यह चार मरीज अलग-अलग ब्लॉकों में मिले है। एहतियात के तौर पर स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर परिजनों सहित गांव के लोगों की डेंगू की जांच करवाई जा रही है। बारिश के दिनों में जगह-जगह जलभराव के कारण मच्छर पनपते है। इन मच्छरों के कारण डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारी फैलने का खतरा बना रहता है। बैतूल में अब डेंगू धीरे-धीरे अपने पांव पसारने लगा है। डेंगू के मरीज मिलने से स्वास्थ्य विभाग की चिंता और बढ़ गई है। डेंगू के मरीज मिलने से टेंशन जरूर बढ़ी है, लेकिन मलेरिया के मरीज कम होने के कारण थोड़ी राहत भी है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का कहना है कि

बारिश को देखते हुए लार्वा सर्वे का काम तेजी से किया जा रहा है। जहां भी बारिश का पानी रूका है, वहां लार्वे की जांच की जा रही है और वहां से लार्वे को नष्ट कर रहे है।

इन चार ब्लॉकों मिले डेंगू पॉजिटिव– जिले के चार ब्लॉकों में चार डेंगू पॉजिटिव मरीज मिले है। डेंगू को लेकर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया तो यह बीमारी जिले में तेजी से पांव पसार सकती है। जिला मलेरिया अधिकारी जितेन्द्र राजपूत ने बताया कि अभी एक सप्ताह के भीतर चिचोली, घोड़ाडोंगरी, शाहपुर और सेहरा के गांवों में एक-एक डेंगू मरीज पॉजिटिव मिला है। इसके पहले जिले में डेंगू के पांच मरीज मिले थे। अब जिले में जनवरी से लेकर अब तक कुल डेंगू के 9 मरीज मिले है। हालांकि जो मरीज डेंगू पॉजिटिव मिले थे। उनमें से कुछ मरीज स्वस्थ भी हो चुके है।

एलाइजा टेस्ट होने पर भी मानते डेंगू पॉजिटिव

डेंगू की जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग की तरफ से एलाइजा टेस्ट ही मान्य किया जाता है। किट से किए गए टेस्ट को मान्य नहीं करते है। वैसे निजी अस्पतालों में किट द्वारा डेंगू का टेस्ट किया जाता है, जिसमें कई मरीजों में डेंगू के लक्षण पाए जाते है, लेकिन स्वास्थ्य विभाग की तरफ से किट की जांच को मान्य नहीं किया जाता है। अभी एक सप्ताह के भीतर जिले में चार डेंगू मरीज मिले है। उन सभी मरीजों की एलाइजा रिपोर्ट पॉजिटिव आई है।

इनका कहना

एक सप्ताह के भीतर चार ब्लॉकों में एक-एक डेंगू पॉजिटिव मरीज मिले है। डेंगू को लेकर लार्वा सर्वे, स्लाइड बनाने का काम तेजी से चल रहा है। प्रदेश स्तर पर देखा जाए तो बैतूल में डेंगू की स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है।

-जितेन्द्र राजपूत,
जिला मलेरिया अधिकारी, बैतूल

पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर यातायात प्रभारी गजेंद्र केन ने की स्कूल बसों की जांच, की चालानी कार्यवाही

बैतूल। यातायात थाना प्रभारी द्वारा कप्तान के निर्देश पर की स्कूल बसों की जांच की और कमियाँ पाए जाने पर कार्यवाही भी की। गौरतलब है कि पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया द्वारा काईम मीटिंग में सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया था कि स्कूलों कॉलेज के छात्र-छात्राओं को परिवहन कर रहे वाहनों में सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम है कि नहीं, समस्त वाहनों में फिटनेस परमिट है या नही, इसमे सघन जांच की जाए और उल्लंघनकर्ताओं के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाये। उक्त निर्देशों का पालन करते हुए यातायात थाना बैतूल का स्टाफ ने प्रातः 8 बजे से स्कूल कॉलेज की बसों की सघन चेकिंग करना शुरू कर दी जिसमें 20 बसो को चेक किया गया। चेकिंग के दौरान एक बस बिना बीमा के संचालन पाये जाने पर 5000 रुपये जुर्माना किया गया। साथ ही एक बस बिना परमिट के कॉलेज के छात्रों को परिवहन करते पाए जाने पर 10000 रुपये का जुर्माना किया गया। अन्य दो बसों मे अग्निशमन यंत्र नही पाये जाने पर 500-500 रुपये का जुर्माना किया गया। साथ ही स्कूल कॉलेज प्रबंधको को भविष्य में मोटर अधिनियम के उल्लंघन में बस संचालन करते पाये जाने पर सख्त कार्यवाही की हिदायत दी गई। यातायात प्रभारी गजेन्द्र केन का कहना है की स्कूल बसों की लगातार चेकिंग की जाएगी, यदि कोई भी स्कूल बस नियमो का उलंघन कर अनियमितता करते पाये जायेंगे तो उन पर यातायात पुलिस यथासंभव कार्यवाही करेंगी।

घर में अवैध शराब रखने वाले आरोपी को न्यायालय ने दी सजा

देवास। घर में अवैध शराब रखने वाले आरोपी को न्यायालय ने दो वर्ष के कारावास के साथ अर्थदंड से दंडित किया है। प्रभारी उप संचालक/जिला जिला अभियोजन अधिकारी जिला देवास श्री राजेन्द्र सिंह भदौरिया, द्वारा बताया गया कि 30.जुलाई 18 को आबकारी विभाग वृत्त 'अ' देवास में पदस्थ उपनिरीक्षक निधि शर्मा को इलाका भ्रमण के दौरान सूचना प्राप्त हुई कि मनीष पिता आत्माराम प्रजापति अपने रहवासी मकान में अवैध शराब रखे हुये है। सूचना प्राप्ति के पश्चात वह अपने कार्यालय से दो गवाह एवं आबकारी स्टाफ के साथ अभियुक्त के घर ग्राम सिंघावदा पहुँचकर उसके मकान की तलाशी लेने पर प्लास्टिक की बोरियों एवं गत्तों के कार्टून में कुल 300 क्वार्टर प्लेन मदिरा के एवं 150 क्वार्टर मसाला मदिरा के मिले थे। ।

उक्त मदिरा को रखने के संबंध मे लाईसेंस का पूछने पर उसने कोई लाईसेंस नहीं होना बताया था मौके पर ही अभियुक्त के कब्जे से उक्त मदिरा को जप्त किया और अभियुक्त को गिगरफ्तार किया जाकर उक्त प्रकरण पंजीबद्ध कर विववेचना में लिया गया। उक्त प्रकरण में अन्य आवश्यक अनुसंधान पूर्ण कर अभियोग पत्र अंतर्गत धारा 34(2) आबकारी अधिनियम के तहत माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया।

उक्त प्रकरण में माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा निर्णय पारित कर आरोपी मनीष पिता आत्माराम प्रजापति निवासी ग्राम सिंघावदा को आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के अपराध में दोषी पाते हुये 02 वर्ष का सश्रम कारावास तथा 25000/-रूपए अर्थदण्ड से दण्डित किया।

उक्त प्रकरण में शासन की ओर से श्री महेन्द्र सितोले, सहायक जिला अभियोजन अधिकारी, जिला देवास द्वारा पैरवी की गई।

जब बचेगा जल तो सुरक्षित होगा आने वाला कल : कलेक्टर श्री गुप्ता

देवास। जिले में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए अमृत संचय अभियान चलाया जा रहा हैं इस अभियान के अंतर्गत देवास कलेक्टर ऋषव गुप्ता इनोवेटिव पब्लिक हा.से स्कूल देवास में पहुचें। यहां उन्होंने विद्यार्थियों और पालकों से संवाद किया। कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने बच्चों और उनके अभिभावकों के साथ सार्थक संवाद किया और कहा कि बच्चे अपने आने वाले कल के लिए पानी बचाएं साथ ही परिजनों को भी पानी का महत्व समझाएं क्योंकि आज के बच्चे हम सबसे ज्यादा समझदार हैं। श्री गुप्ता ने पर्यावरण की अनदेखी के रूप में दिल्ली, बैगलुरू, चेन्नई के उदाहरण देते हुए कहा कि दिनों दिन बिगड़ते पर्यावरण और कम होते जलस्तर के लिए हम सबकी प्राथमिकता जल संचय में होना चाहिये और हर घर में रूफ वाटर , रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाना चाहिए। कलेक्टर के उद्बोधन से प्रेरित होकर 5-6 पालकों और शिक्षकों ने अपने घर पर रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने की सहमति भी दी। सर्वप्रथम अतिथियों का स्वागत संस्था सचिव मिर्जा मुशाहिद बैग, प्राचार्य सय्यद मकसूद अली, उपप्राचार्य शबीना सय्यद, संजय देवल ने किया। इस अवसर पर अमृत संचय अभियान की टीम के सूत्रधार सुनील चतुर्वेदी, गंगा सिंह सोलंकी, मोहन वर्मा,मनीष वैद्य,श्रीकांत उपाध्याय, विपिन पंड्या,महेश सोनी,सुनीता कुशवाह भी उपस्थित थे। अंत में अतिथियों को स्मृति चिन्ह स्वरूप पौधे चंद्रपाल सिंह सोलंकी, मिर्जा मुशब्बीर बैग, सय्यद सदाकत अली ने भेंट किए। कार्यक्रम का संचालन सय्यद मकसूद अली ने किया एवं आभार सय्यद सदाकत अली ने माना।

मित्र वही जो बुरे वक्त पर काम आए : सतीश पवार

जिला नोडल अधिकारी आनंद विभाग, ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे.... स्कूल में मनाया मित्रता दिवस

बैतूल। राज्य आनंद संस्थान द्वारा निर्देशित अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस पर प्रत्याशा आनंद क्लब द्वारा शासकीय कन्या परिसर सदर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रत्याशा आनंद क्लब की अध्यक्ष तूलिका पचौरी ने बताया कि सच्ची दोस्ती की शुरुआत स्कूल, कॉलेज के दिनों से ही होती है, बिना स्वार्थ, बिना भेदभाव के सच्चे दोस्त हमारे बचपन में ही बनते हैं। जिला आनंदम के नोडल अधिकारी सतीश पवार ने कहा कि मित्रता के सही मायने यह है कि जब दोस्त हमारे लिए सही समय पर काम आए, सही सलाह दे एवं हमेशा साथ दे। रेखा कापसे मास्टर

ट्रेनर राज्य आनंद संस्थान ने कहा कि दोस्त अपनी भावनाओं को बिना व्यक्त किए ही समझ जाते हैं। प्रमिला धोत्रे प्रत्याशा संस्था से ने कहा कि दोस्त अच्छाई के साथ-साथ अपनी कमियां भी बताते हैं और उन कमियों को दूर भी करवाते हैं। साक्षी शर्मा द्वारा बच्चों को दोस्ती के बीच अटूट प्रेम देखना चाहिए, महेश गूंजेले राज्य आनंदम संस्थान ने एक सुंदर गीत की प्रस्तुति दी और बच्चों को दोस्ती अच्छे लोगों से करने के लिए प्रेरित किया। बच्चों द्वारा भी अपने दोस्तों की अच्छाइयां बताई गई, स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। कन्या परिसर की ओर से कीर्ति मसदकर, सपना दावनडे, कृष्ण अमरुते, आशा डागे ,कल्पना वर्मा , सीमा कालभोर ,सिंगारे सर उपस्थित थे सभी ने अपने विचार साझा किया।

वेतनमान में देरी से परेशान आमला नगरपालिका के कर्मचारी, कलेक्टर को सौंपा आवेदन

बैतूल/आमला। आमला नगरपालिका के कर्मचारियों को समय पर वेतन न मिलने के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या को लेकर कर्मचारियों ने कलेक्टर को आवेदन सौंपा है, जिसमें उन्होंने समय पर वेतन दिलवाने की मांग की है। आवेदन में उल्लेख किया गया है कि वेतन में देरी के कारण कई कर्मचारियों को लोन की किश्तें समय पर न भरने पर बैंक द्वारा पेनाल्टी का सामना करना पड़ता है। कर्मचारियों ने मांग की है कि प्रत्येक माह का वेतन 1 से 5 तारीख के बीच दिया जाए ताकि वे और उनके परिवार की वित्तीय जरूरतें पूरी हो सकें, जैसे बच्चों की फीस समय पर जमा हो सके। नगरपालिका कर्मचारी संगठन के हरिओम कुशवाह ने बताया कि यह समस्या कई वर्षों से चली आ रही है और इससे कर्मचारियों को बहुत परेशानी होती है। उन्होंने कहा कि 20 से 25 वर्षों से एक ही नगर पालिका में कार्यरत बाबू और उनके समकक्ष अधिकारियों का स्थानांतरण जिले से बाहर किया जाए ताकि प्रशासनिक प्रक्रियाओं में सुधार हो सके।

आमला नगरपालिका के कर्मचारियों ने कलेक्टर से अपील की है कि वे इस मुद्दे पर तत्काल हस्तक्षेप करें और सुनिश्चित करें कि सभी कर्मचारियों को उनके वेतनमान 1 से 5 तारीख तक मिल सके। इस मामले को लेकर कर्मचारी संगठन ने मध्यप्रदेश के आयुक्त नगर पालिका निगम और समस्त संभागीय संचालक, नगरीय प्रशासन को भी पत्र भेजा है। इसमें कहा गया है कि निकाय के कर्मचारियों को समय पर वेतन न मिलने से उनकी वित्तीय स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पत्र में यह भी बताया गया है कि समस्त सफाई संरक्षकों का वेतन भुगतान माह के प्रथम दिवस पर किया जाना चाहिए और अवकाश होने की स्थिति में अगले कार्य दिवस तक किया जाना सुनिश्चित किया जाए। आवेदन में यह भी उल्लेख किया गया है कि संदर्भित संचालनालयीन पत्र के अनुसार समस्त निकाय प्रमुखों को निर्देशित किया गया था कि वे समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों का वेतन भुगतान समय पर करें और जीपीएफ/एनपीएस की राशि भी समय पर जमा करें। कर्मचारियों की इस समस्या को देखते हुए कलेक्टर से निवेदन किया गया है कि वे इस मामले में त्वरित कार्रवाई करें और कर्मचारियों को समय पर वेतन दिलवाने में मदद करें ताकि उनकी वित्तीय समस्याओं का समाधान हो सके।

विश्वरंग 2024 का पोस्टर जारी करते संतोष चौबे व अन्य

रबीन्द्रनाथ टैगोर की प्रस्तर कलाकृतियों की प्रदर्शनी में शिल्पकार अनीता दुबे

विश्वरंग में छग की लोकगायिका पूनम तिवारी

रबीन्द्रनाथ टैगोर विवि के तत्वावधान में होने वाला हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति का छठा 'विश्वरंग' उत्सव अब देश की भौगोलिक सीमाएं लांघकर मॉरीशस में आयोजित हो रहा है। बीते पांच वर्षों में विश्वरंग एक राष्ट्रीय और समावेशी सांस्कृतिक आंदोलन में तब्दील हो चुका है। इसने बाल कला से लेकर कला, साहित्य और विज्ञान को जोड़ने का अनूठा कार्य किया है। विश्वरंग के विभिन्न संस्करणों की झलक इन तस्वीरों में...

मूर्धन्य चित्रकार सुधीर पटवर्धन से दीर्घ संवाद पुस्तिका का विमोचन

पखावज वादक अखिलेश गुंदेचा के संयोजन में मध्य लय ताल कचहरी

श्री जानकी बैंड जबलपुर द्वारा हिंदी की कालजयी कविताओं का वृंदगान

गायिका कौशिकी चक्रवर्ती का शास्त्रीय गायन

लोक गायिका मैथिली ठाकुर का गायन

आरएनटीयू के कुलाधिपति संतोष चौबे विश्वरंग में संदेश लिखते हुए

मोहन वीणा वादन करते हुए साक्षी शेवलीकर

विश्वरंग में संगीत की उल्लासमय प्रस्तुति

विश्वरंग में आयोजित स्पर्द्धाओं के विजेताओं के साथ संतोष चौबे

विश्वरंग में प्रसिद्ध वायलिन वादक त्रिबंधु महेश मलिक, अमित मलिक व ऋषभ मलिक

बाल कलाकारों द्वारा भक्ति संगीत की प्रस्तुति